गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 045
दि. 14.06.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

भारतीय सेना को मिला नया रणनीतिक नेतृत्व: लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ के हाथों में होगी भविष्य की सैन्य कमान

नई दिल्ली। भारतीय सेना एक महत्वपूर्ण नेतृत्व परिवर्तन के दौर से गुजरने जा रही है। केंद्र सरकार ने वर्तमान उप सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ को देश का अगला सेना प्रमुख नियुक्त करने का फैसला किया है। आगामी 30 जून 2026 को वह भारतीय थल सेना के सर्वोच्च पद की जिम्मेदारी संभालेंगे। उसी दिन वर्तमान सेना प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी अपने लंबे और गौरवपूर्ण सैन्य करियर के बाद सेवानिवृत्त होंगे। इस नियुक्ति को केवल एक नियमित प्रशासनिक बदलाव के रूप में नहीं देखा जा रहा है, बल्कि इसे भारतीय सेना के आधुनिकीकरण, तकनीकी सशक्तिकरण और भविष्य की सैन्य चुनौतियों के लिए तैयार होने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ उन चुनिंदा सैन्य अधिकारियों में शामिल हैं जिन्होंने अपने लगभग चार दशक लंबे करियर में सेना के विभिन्न स्तरों पर नेतृत्व, रणनीतिक सोच और संचालन क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। उनका सैन्य जीवन केवल पदोन्नतियों और जिम्मेदारियों का सफर नहीं रहा, बल्कि यह उन अनुभवों और उपलब्धियों की कहानी है जिसने उन्हें भारतीय सेना के सर्वोच्च पद तक पहुंचाया है। उनके नेतृत्व में सेना को एक ऐसा कमांडर मिलने जा रहा है, जिसने युद्धक्षेत्र से लेकर रणनीतिक योजना निर्माण तक हर महत्वपूर्ण क्षेत्र में अपनी दक्षता सिद्ध की है।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला के पूर्व छात्र रहे धीरज सेठ ने दिसंबर 1986 में भारतीय सेना की प्रतिष्ठित आर्म्ड कॉर्प्स में कमीशन प्राप्त किया था। आर्म्ड कॉर्प्स भारतीय सेना की सबसे महत्वपूर्ण युद्धक शाखाओं में से एक मानी जाती है, जो टैंकों और बख्तरबंद युद्धक वाहनों के संचालन के लिए जानी जाती है। युवा अधिकारी के रूप में उन्होंने अपने करियर की शुरुआत उसी समय की, जब भारतीय सेना तेजी से आधुनिक युद्ध की नई अवधारणाओं की ओर बढ़ रही थी। शुरुआती वर्षों से ही उन्होंने अपने नेतृत्व कौशल, रणनीतिक दृष्टि और सैन्य अनुशासन के कारण वरिष्ठ अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया। सैन्य विशेषज्ञों का मानना है कि किसी भी अधिकारी की वास्तविक क्षमता उसकी फील्ड कमांड में दिखाई देती है और धीरज सेठ ने अपने करियर में ऐसी अनेक जिम्मेदारियां निभाईं, जिन्होंने उन्हें एक कुशल सैन्य नेता के रूप में स्थापित किया। उन्होंने पश्चिमी सीमा के रेगिस्तानी क्षेत्रों में एक आर्म्ड रेजिमेंट की कमान संभाली, जहां कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और चुनौतीपूर्ण सैन्य वातावरण में नेतृत्व करना किसी भी अधिकारी के लिए बड़ी परीक्षा माना जाता है। इसके बाद उन्होंने पश्चिमी थिएटर में एक आर्म्ड ब्रिगेड का नेतृत्व किया, जो भारतीय सेना की युद्धक तैयारियों का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है।

उनके करियर का एक महत्वपूर्ण अध्याय जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद विरोधी अभियानों से जुड़ा रहा। सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र में उन्होंने काउंटर-इंसर्जेंसी फोर्स का नेतृत्व किया और जटिल सुरक्षा चुनौतियों के बीच सेना के अभियानों का सफल संचालन किया। जम्मू-कश्मीर जैसे क्षेत्र में नेतृत्व करना केवल सैन्य कौशल का ही नहीं, बल्कि धैर्य, निर्णय क्षमता और स्थानीय परिस्थितियों की गहरी समझ का भी परीक्षण होता है। इस दौरान उनके नेतृत्व और रणनीतिक दृष्टिकोण की व्यापक सराहना हुई।

लेफ्टिनेंट जनरल के पद पर पदोन्नत होने के बाद उन्हें भारतीय सेना की प्रतिष्ठित 'सुदर्शन चक्र कॉर्प्स' की कमान सौंपी गई। यह सेना की सबसे महत्वपूर्ण स्ट्राइक फॉर्मेशन में से एक मानी जाती है। स्ट्राइक कॉर्प्स का मुख्य उद्देश्य युद्ध की स्थिति में निर्णायक और आक्रामक कार्रवाई करना होता है। इस जिम्मेदारी ने उन्हें बड़े स्तर पर सैन्य संचालन, संयुक्त युद्धक रणनीतियों और भविष्य की सैन्य तैयारियों को समझने का अवसर प्रदान किया। उनके नेतृत्व में इस महत्वपूर्ण फॉर्मेशन ने अपनी युद्धक क्षमता और परिचालन दक्षता को और मजबूत किया।

इसके बाद उन्होंने जनरल ऑफिसर कमांडिंग, दिल्ली एरिया के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह जिम्मेदारी केवल सैन्य प्रशासन तक सीमित नहीं होती, बल्कि इसमें राष्ट्रीय महत्व के आयोजनों, विदेशी सैन्य प्रतिनिधिमंडलों के साथ समन्वय, राष्ट्रीय समारोहों की सुरक्षा और अनेक रणनीतिक कार्य शामिल होते हैं। राजधानी क्षेत्र में उनकी सेवाओं ने यह साबित किया कि वे केवल युद्धक्षेत्र के कमांडर ही नहीं, बल्कि प्रशासनिक और संस्थागत नेतृत्व में भी समान रूप से सक्षम हैं।

धीरज सेठ के करियर की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक भारतीय सेना की दो प्रमुख ऑपरेशनल कमानों का नेतृत्व करना माना जाता है। उन्होंने दक्षिण पश्चिमी कमान और दक्षिणी कमान दोनों का नेतृत्व किया, जो अपने आप में एक दुर्लभ उपलब्धि है। सैन्य इतिहास में बहुत कम अधिकारियों को यह अवसर मिलता है कि वे दो महत्वपूर्ण ऑपरेशनल कमानों का नेतृत्व करें। ढाई वर्षों से अधिक समय तक उन्होंने इन दोनों कमानों में रणनीतिक और परिचालन जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। इस दौरान उन्होंने सीमावर्ती सुरक्षा, सैन्य तैयारियों, प्रशिक्षण और युद्धक क्षमताओं को मजबूत बनाने की दिशा में कई महत्वपूर्ण पहलें कीं।

आधुनिक युद्ध के बदलते स्वरूप को देखते हुए धीरज सेठ की सबसे बड़ी विशेषता उनकी तकनीकी और रणनीतिक समझ मानी जाती है। आज का युद्ध केवल टैंकों, तोपों और सैनिकों तक सीमित नहीं रह गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन तकनीक, साइबर सुरक्षा, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली और डेटा आधारित निर्णय प्रक्रिया आधुनिक युद्ध का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। धीरज सेठ उन अधिकारियों में शामिल हैं जिन्होंने इन नई तकनीकों को भारतीय सेना की युद्धक संरचना का हिस्सा बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सेना मुख्यालय में रणनीतिक योजना और क्षमता विकास से जुड़े महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए उन्होंने भविष्य की सैन्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कई दीर्घकालिक योजनाओं के निर्माण में भूमिका निभाई। उन्होंने सेना के बल संगठन, आधुनिकीकरण कार्यक्रमों और तकनीकी उन्नयन की दिशा में सक्रिय योगदान दिया। सैन्य विशेषज्ञ मानते हैं कि उनकी यह पृष्ठभूमि उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए विशेष रूप से सक्षम बनाती है।

भारतीय सेना वर्तमान समय में अनेक महत्वपूर्ण बदलावों के दौर से गुजर रही है। एक ओर सीमाओं पर लगातार सतर्कता बनाए रखने की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर तकनीकी आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन और संयुक्त सैन्य अभियानों की अवधारणा को भी तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। ऐसे समय में सेना को ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है जो पारंपरिक सैन्य अनुभव के साथ-साथ आधुनिक तकनीकी दृष्टिकोण भी रखता हो। धीरज सेठ की नियुक्ति को इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

उनके सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में सेना के आधुनिकीकरण की गति को बनाए रखना, भविष्य के युद्धक्षेत्र के लिए सैनिकों को तैयार करना, स्वदेशी रक्षा प्रणालियों के उपयोग को बढ़ावा देना और उभरती सुरक्षा चुनौतियों के अनुरूप सैन्य रणनीतियों का विकास करना शामिल होगा। इसके अलावा सीमावर्ती क्षेत्रों में बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों और नई तकनीकों के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए सेना की युद्धक क्षमता को और मजबूत करना भी उनकी प्राथमिकताओं में शामिल रहेगा।

सैन्य विश्लेषकों का मानना है कि धीरज सेठ का अनुभव, नेतृत्व क्षमता और तकनीकी समझ भारतीय सेना को आने वाले वर्षों में नई दिशा प्रदान कर सकती है। उनका करियर यह दर्शाता है कि उन्होंने केवल फील्ड कमांड ही नहीं संभाली, बल्कि नीति निर्माण, संस्थागत विकास और रणनीतिक योजना के स्तर पर भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यही व्यापक अनुभव उन्हें भारतीय सेना के सर्वोच्च पद के लिए उपयुक्त बनाता है। 30 जून 2026 को जब लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ सेना प्रमुख का पदभार ग्रहण करेंगे, तब वह केवल एक पद नहीं संभालेंगे, बल्कि दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे पेशेवर सेनाओं में से एक के भविष्य का नेतृत्व भी अपने हाथों में लेंगे। उनकी नियुक्ति भारतीय सेना के लिए एक नए अध्याय की शुरुआत मानी जा रही है, जिसमें परंपरागत सैन्य शक्ति और आधुनिक तकनीकी क्षमता का समन्वय देखने को मिलेगा। आने वाले वर्षों में उनकी रणनीतिक दृष्टि और नेतृत्व भारतीय सेना की दिशा और दशा दोनों को प्रभावित करेगा, जिस पर देश और दुनिया की नजरें टिकी रहेंगी।

गांवों की तस्वीर बदलने वाली क्रांति: 'स्वामित्व योजना' ने दिलाया मालिकाना हक, गुजरात बना पूरे देश का मॉडल

नई दिल्ली/गांधीनगर। ग्रामीण भारत में विकास की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक हमेशा यह रही कि लाखों लोग पीढ़ियों से जिस घर और जमीन पर रह रहे थे, उसके स्पष्ट और वैधानिक दस्तावेज उनके पास नहीं थे। गांवों में मकानों और आवासीय संपत्तियों का स्वामित्व अक्सर परंपरागत मान्यताओं, मौखिक सहमतियों या पुराने रिकॉर्ड के आधार पर चलता रहा, जिसके कारण भूमि विवाद, कानूनी उलझनें और आर्थिक अवसरों की कमी जैसी समस्याएं वर्षों तक बनी रहीं। कई परिवार ऐसे थे जिनके पास अपनी संपत्ति तो थी, लेकिन उसके कानूनी दस्तावेज नहीं होने के कारण वे बैंक से ऋण नहीं ले सकते थे, संपत्ति का स्पष्ट हस्तांतरण नहीं कर सकते थे और कई बार विवाद की स्थिति में अपने अधिकारों को साबित करने में भी कठिनाइयों का सामना करते थे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई 'प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना' ने इस स्थिति को बदलने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। यह योजना केवल संपत्ति का दस्तावेज उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण भारत को आर्थिक, सामाजिक और प्रशासनिक रूप से सशक्त बनाने का एक व्यापक अभियान बन चुकी है। योजना का उद्देश्य गांवों में आवासीय संपत्तियों का आधुनिक तकनीक के माध्यम से सर्वेक्षण कर प्रत्येक पात्र नागरिक को वैधानिक प्रॉपर्टी कार्ड उपलब्ध कराना है, जिससे उसे अपनी संपत्ति पर स्पष्ट कानूनी अधिकार प्राप्त हो सके। इस महत्वाकांक्षी योजना के क्रियान्वयन में गुजरात ने जो उपलब्धि हासिल की है, उसने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य ने योजना के दूसरे चरण में अभूतपूर्व सफलता दर्ज करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर पहला स्थान प्राप्त किया है। आंकड़े बताते हैं कि पूरे देश में दूसरे चरण के दौरान जितने प्रॉपर्टी कार्ड जारी किए गए, उनमें से आधे से अधिक केवल गुजरात में तैयार हुए। यह उपलब्धि न केवल प्रशासनिक दक्षता का प्रमाण है, बल्कि इस बात का भी संकेत है कि यदि आधुनिक तकनीक, पारदर्शी व्यवस्था और जनसहभागिता का प्रभावी समन्वय हो तो ग्रामीण विकास के क्षेत्र में बड़े बदलाव संभव हैं। स्वामित्व योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें अत्याधुनिक ड्रोन तकनीक का उपयोग किया गया है। पहले जहां गांवों में संपत्ति का सीमांकन और रिकॉर्ड तैयार करने में वर्षों लग जाते थे, वहीं अब ड्रोन सर्वेक्षण के माध्यम से कुछ ही समय में सटीक मानचित्र तैयार किए जा रहे हैं। इन मानचित्रों को डिजिटल रिकॉर्ड से जोड़कर प्रत्येक संपत्ति की स्पष्ट पहचान सुनिश्चित की जाती है। इससे न केवल पारदर्शिता बढ़ी है, बल्कि मानवीय त्रुटियों और विवादों की संभावनाएं भी काफी कम हुई हैं। गुजरात में इस योजना के अंतर्गत अब तक 18 लाख 50 हजार से अधिक ग्रामीण संपत्तियों के वैधानिक प्रॉपर्टी कार्ड तैयार किए जा चुके हैं। वर्ष 2021-22 में योजना के दूसरे चरण से जुड़ने के बाद राज्य ने जिस गति से कार्य किया, वह पूरे देश के लिए एक उदाहरण बन गया। राष्ट्रीय स्तर पर दूसरे चरण में 58 हजार से अधिक गांवों में ड्रोन सर्वेक्षण किया गया और 32 लाख से अधिक प्रॉपर्टी कार्ड बनाए गए। इनमें अकेले गुजरात की हिस्सेदारी 18 लाख 50 हजार से अधिक कार्डों की रही, जो इस अभियान की सफलता में राज्य की अग्रणी भूमिका को दर्शाती है।

योजना के प्रभाव का सबसे बड़ा लाभ ग्रामीण परिवारों को मिला है। पहले जहां संपत्ति के स्वामित्व को लेकर अनेक विवाद होते थे, वहीं अब स्पष्ट रिकॉर्ड उपलब्ध होने से विवादों में उल्लेखनीय कमी आई है। कई गांवों में वर्षों पुराने भूमि विवाद समाप्त हुए हैं और लोगों को अदालतों के चक्कर लगाने से राहत मिली है। ग्रामीणों का कहना है कि प्रॉपर्टी कार्ड मिलने के बाद उन्हें पहली बार यह एहसास हुआ है कि उनकी संपत्ति को कानूनी मान्यता प्राप्त है और उस पर उनका अधिकार सुरक्षित है। इस अभियान की सफलता में भारतीय सर्वेक्षण विभाग, गुजरात राजस्व विभाग और पंचायती राज विभाग के बीच बेहतर समन्वय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ड्रोन सर्वेक्षण, जीआईएस आधारित मैपिंग और डिजिटल रिकॉर्ड प्रबंधन ने पूरी प्रक्रिया को पारदर्शी और विश्वसनीय बनाया है। राज्य के कई जिलों ने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। मेहसाणा जिले में सबसे अधिक 1.66 लाख से अधिक प्रॉपर्टी कार्ड जारी किए गए हैं, जबकि अहमदाबाद जिले में 1.53 लाख से अधिक कार्ड तैयार किए गए। इसके अतिरिक्त खेड़ा, बनासकांठा और आणंद जैसे जिलों में भी एक-एक लाख से अधिक प्रॉपर्टी कार्ड जारी किए गए हैं।

स्वामित्व योजना का प्रभाव केवल कानूनी अधिकार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई दिशा दी है। पहले जिन संपत्तियों को केवल रहने की जगह माना जाता था, वे अब आर्थिक परिसंपत्ति के रूप में उभर रही हैं। प्रॉपर्टी कार्ड मिलने के बाद ग्रामीण नागरिक अपनी संपत्ति के आधार पर बैंक से ऋण प्राप्त कर पा रहे हैं। इससे छोटे व्यवसाय शुरू करने, कृषि से जुड़े निवेश करने, बच्चों की शिक्षा के लिए धन जुटाने और अन्य आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिल रही है। गुजरात में इस योजना के तहत प्रॉपर्टी कार्ड के आधार पर 50 लाख रुपये तक के बैंक ऋण स्वीकृत किए जाने के उदाहरण सामने आए हैं। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा परिवर्तन है, क्योंकि पहले वैधानिक दस्तावेजों के अभाव में बैंक ऋण प्राप्त करना अत्यंत कठिन था। अब वही संपत्ति, जो वर्षों तक केवल एक आवासीय इकाई मानी जाती थी, आर्थिक प्रगति का साधन बन गई है। महिलाओं के सशक्तिकरण की दृष्टि से भी यह योजना अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो रही है। संपत्ति के स्पष्ट रिकॉर्ड और कानूनी पहचान से महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ी है। कई परिवारों में महिलाओं के नाम पर संपत्ति का पंजीकरण होने से उन्हें वित्तीय निर्णयों में अधिक भूमिका मिल रही है। इससे सामाजिक सुरक्षा की भावना भी मजबूत हुई है। वंचित और कमजोर वर्गों को भी योजना का सीधा लाभ मिला है, क्योंकि अब उन्हें अपनी संपत्ति के अधिकारों को साबित करने के लिए अतिरिक्त संघर्ष नहीं करना पड़ता। ग्रामीण विकास विशेषज्ञों का मानना है कि स्वामित्व योजना केवल संपत्ति का दस्तावेज प्रदान करने की योजना नहीं है, बल्कि यह डिजिटल ग्रामीण भारत की नींव मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

संपादकीय

निरंकुशता के निशाने

खाड़ी में ईरान की नाकेबंदी की कवायद के दौरान अमेरिकी हमलों में तीन भारतीय नाविकों का मारा जाना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। जिसको लेकर देश में गम व गुस्सा व्याप्त है। यूं तो कहा जाता रहा है कि भारत अमेरिका का रणनीतिक साझेदार है और क्वॉड जैसे संगठनों में भूमिका निभा रहा है, तो फिर लगातार भारत के हितों पर कुठाराघात क्यों किया जा रहा है? भले ही अमेरिका ईरान की तेल निर्यात से होने वाली आय रोकने व युद्ध समाप्त करने हेतु समझौते के लिये दबाव बनाने हेतु ये आक्रामक नीति अपना रहा हो। लेकिन जिन देशों का युद्ध से कोई लेना-देना नहीं है, उनके नागरिकों को क्यों निशाना बनाया जा रहा है? हाल में भारतीय चालक दल वाले तीन टैंकरों को अमेरिकी सेना द्वारा निशाना बनाया गया है। इसमें से, ओमान की खाड़ी में एक जहाज पर हुए हमले में भारतीय चालक दल के तीन सदस्य मारे गये हैं। जिससे भारत व अमेरिका के बीच कूटनीतिक तनाव बढ़ने की आशंका बढ़ गई है। वैसे औपचारिक विरोध दर्ज करते हुए भारत ने दिल्ली में एक अमेरिकी राजनयिक को तलब भी किया है। इसके बावजूद भारत के खिलाफ लगातार नकारात्मक रवैया दर्शाने वाले अमेरिका के खिलाफ सख्त स्टैंड लेने की मांग की जा रही है। इसके बावजूद कि भारत क्वॉड में अमेरिका का साझेदार है। विडंबना यह भी है कि जो सूत्रधार संगठन के जरिये समुद्री आवाजाही को स्वतंत्र बनाने की बात करता है, वही अमेरिका इसमें बाधक बना है। भले ही अमेरिका इन जहाजों के प्रतिबंधित होने की बात कहे, या जहाज भारतीय न हों, लेकिन उनमें चालक दल के सदस्य तो भारतीय थे। इसकी जानकारी स्वाभाविक रूप से अमेरिका के खुफिया तंत्र को जरूर रही होगी। अमेरिका को सार्वजनिक रूप से भारतीय नाविकों के मारे जाने पर खेद जताना चाहिए। निश्चय ही भारत के निकट के समुद्री क्षेत्र में अमेरिका का निरंकुश व्यवहार निंदनीय है। कूटनीतिज्ञ विशेषज्ञ कह रहे हैं कि भारत को इस मुद्दे को सख्ती से अमेरिका के सामने उठाना चाहिए था।

तमाम भारतीयों को इस मामले में विदेश मंत्रालय की प्रतिक्रिया उदार लगती है। सवाल पूछा जा रहा है कि यदि तीन अमेरिकी नागरिक मारे जाते तो क्या अमेरिका चुप बैठता? कहा जा रहा है कि भारत का कड़ा विरोध सामने न आने के कारण होर्मुज स्ट्रेट के पास पलाऊ के झंडे वाले टैंकर पर अमेरिकी हमले में तीन भारतीय के मारे जाने की घटना की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कम चर्चा हुई है। विडंबना है कि अमेरिकी सेना ने एक सप्ताह में भारतीय चालक दल वाले तीन टैंकरों को निशाना बनाया। हालांकि, सोमवार को हुए हवाई हमले के बाद ओमानी अधिकारियों ने 24 भारतीयों को सुरक्षित निकाल लिया था। दरअसल, ट्रंप प्रशासन की निरंकुशता के चलते ही अमेरिका रवैया वैश्विक व्यवस्था को चुनौती दे रहा है। आखिर अंतर्राष्ट्रीय जल क्षेत्र में कारोबारी जहाजों को निशाना बनाने का क्या औचित्य है? अमेरिका को यह अधिकार किसने दे दिया कि वह तटस्थ देशों के नागरिकों को निशाना बनाये? क्यों भारतीय नागरिक अमेरिका व ईरान के बीच जारी संघर्ष की कीमत चुकाएं? इस तरह का शक्ति प्रदर्शन संयुक्त राष्ट्र चार्टर का सीधा उल्लंघन है तथा स्वतंत्र नौवहन के मार्ग में बाधक है। भारतीयों का गुस्सा तब कम हो जाता यदि अमेरिका मरने वाले नाविकों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त कर देता। सही मायने में अमेरिका भारत को अपने कारोबारी हितों के साधन के रूप में तो इस्तेमाल करना चाहता है, लेकिन भारतीय आत्मसम्मान व संप्रभुता का मान नहीं रखता। भारत को बदलती अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप ही अपनी कूटनीति का निर्धारण करना चाहिए। हमें दुनिया को बताना चाहिए कि भारत एक उभरता बाजार ही नहीं है, बल्कि सबसे बड़ी आबादी वाला दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भी है। दुनिया को संदेश जाना चाहिए कि हम अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमाओं में अपने हितों की रक्षा करने में सक्षम हैं। अब चाहे सामने अमेरिका हो या चीन जैसे कोई अन्य देश। भले ही अंतर्राष्ट्रीय सीमा में कई जहाज भारत के स्वामित्व वाले न हों, लेकिन चालक दलों में शामिल भारतीय नागरिकों की सुरक्षा हर कीमत पर की जानी चाहिए।

PoK की जनता को पाकिस्तानी जुल्मों से निजात दिलाने के लिए क्या भारत को सीधे दखल देना चाहिए?

“ पाकिस्तान ने तथाकथित विधानसभा और संविधान का ढांचा तो खड़ा किया, लेकिन असली सत्ता हमेशा इस्लामाबाद और रावलपिंडी के हाथों में रही। वहां की विधानसभा महज कठपुतली संस्था बनकर रह गई है। हाल ही में आरक्षित सीटों को लेकर आए फैसले ने जनता के गुस्से को और भड़का दिया।

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में अब हालात सिर्फ बिगड़ नहीं रहे हैं बल्कि यह इस्लामाबाद के खिलाफ खुले जनविद्रोह का रूप ले चुके हैं। जिन लोगों को पाकिस्तान दशकों से अपने कब्जे का हिस्सा बताकर दुनिया के सामने कश्मीर का झूठा राग अलापता रहा, वही लोग आज सड़कों पर उतरकर उसके दमनकारी चेहरे को बेनकाब कर रहे हैं। आटे पर सब्सिडी, बिजली दरों में कमी, रोजगार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और नागरिक अधिकारों जैसी बुनियादी मांगों को लेकर शुरू हुआ आंदोलन अब पाकिस्तान की औपनिवेशिक नीतियों के खिलाफ व्यापक जनआक्रोश में बदल चुका है। जम्मू-कश्मीर ज्वाइंट आवामी एक्शन कमेटी के नेतृत्व में चल रहे इस आंदोलन को कुचलने के लिए पाकिस्तानी सेना, रेंजर्स और पुलिस ने जिस बर्बरता का प्रदर्शन किया है, उसने पूरी दुनिया को झकझोर कर रख दिया है। निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाई गईं, लाठीचार्ज हुआ, आंसू गैस के गोले दागे गए और इंटरनेट सेवाएं बंद कर पूरे क्षेत्र को अंधेरे में धकेल दिया गया। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार अब तक दर्जनों नागरिक मारे जा चुके हैं और हजारों गिरफ्तारियां हो चुकी हैं। रावलाकोट, मीरपुर, कोटली, भीमबर और पुंछ जैसे क्षेत्रों में हालात विस्फोटक बने हुए हैं।

सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जिन लोगों की जमीनों को डुबोकर मंगला बांध बनाया गया, उन्हीं लोगों को आज आसमान छूते बिजली बिल थमाए जा रहे हैं। पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था को ऊर्जा देने वाला यह विशाल बांध स्थानीय जनता के लिए अभिशाप बन चुका है। हजारों परिवार उजड़ गए, लेकिन पुनर्वास तक नहीं मिला। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन पाकिस्तान करता है, लेकिन उसका लाभ स्थानीय जनता को नहीं मिलता। यही कारण है कि यह आंदोलन अब केवल आर्थिक नहीं, बल्कि अस्तित्व और सम्मान की लड़ाई बन गया है। पाकिस्तान ने तथाकथित विधानसभा और संविधान का ढांचा तो खड़ा किया, लेकिन असली सत्ता हमेशा इस्लामाबाद और रावलपिंडी के हाथों में रही। वहां की विधानसभा महज कठपुतली संस्था बनकर रह गई है। हाल ही में आरक्षित सीटों को लेकर आए फैसले ने जनता के गुस्से को और भड़का दिया। इन सीटों के जरिये पाकिस्तान अपनी पसंद की सरकारें थोपता है और कश्मीरी आवाजों को कुचल देता है। यही कारण है कि लोग अब खुलकर कह रहे हैं कि पाकिस्तान उन्हें नागरिक नहीं, गुलाम समझता है।

स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि पाकिस्तान ने संयुक्त आवामी एक्शन कमेटी को प्रतिबंधित कर दिया है। इसके नेताओं के सिर पर इनाम घोषित किए गए हैं। पत्रकारों को गिरफ्तार किया जा रहा है, मीडिया पर सेंसरशिप थोप दी गई है और इंटरनेट बंद कर सच्चाई छिपाने की कोशिश की जा रही है। लेकिन दमन जितना बढ़ रहा है, जनाक्रोश उतना ही उग्र हो रहा है। ब्रिटेन और अमेरिका में बसे कश्मीरी प्रवासियों ने भी पाकिस्तान के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिए हैं। यह वही प्रवासी समुदाय है जिसे पाकिस्तान वर्षों तक भारत विरोधी प्रचार के लिए इस्तेमाल करता रहा। मगर अब वही लोग इस्लामाबाद के दमन के खिलाफ दुनिया को सच बता रहे हैं। पाकिस्तानी सेना ने पीओके के लोगों के साथ जो बर्बरता की है उसके खिलाफ गुस्सा इतना ज्यादा है कि लोग नारे लगा रहे हैं कि पाकिस्तानी सेना को कुत्ता कहना कुत्ते की तौहीन है। बाइट।

रणनीतिक दृष्टि से देखें तो यह पाकिस्तान के लिए बेहद खतरनाक स्थिति है। यह संकट उसे सीधे 1971 की याद दिला रहा है, जब दमन और सैन्य बल के सहारे पूर्वी पाकिस्तान को दबाने की कोशिश ने अंततः बांग्लादेश के निर्माण का रास्ता खोला था। आज पीओके में भी वही हालात दिखाई दे रहे हैं। जनता का भरोसा टूट चुका है और पाकिस्तान केवल बंदूक के दम पर कब्जा बनाए रखना चाहता है। लेकिन इतिहास गवाह है कि भय के सहारे किसी क्षेत्र को लंबे समय तक नियंत्रित नहीं रखा जा सकता।

उधर, भारत के लिए यह स्थिति सामरिक और कूटनीतिक दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। जमीनी हकीकत यह है कि वैसे तो पूरा जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है लेकिन पीओके में पाकिस्तान का कब्जा अवैध है। अब जब वहां की जनता खुद पाकिस्तान के खिलाफ उठ खड़ी हुई है और भारत के साथ मिलने की बातें मुखर होने लगी हैं तो सवाल उठता है कि भारत को क्या पीओके में सीधे हस्तक्षेप करना चाहिए? इस सवाल पर अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ बंटे हुए नजर आ रहे हैं। कई विश्लेषकों का कहना है कि सीधे हस्तक्षेप की बजाय भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान के मानवाधिकार उल्लंघनों को और आक्रामक तरीके से उठाना चाहिए। उनका कहना है कि भारत को संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय देशों और वैश्विक मानवाधिकार संगठनों के सामने यह प्रश्न मजबूती से रखना होगा कि आखिर पाकिस्तान किस नैतिक आधार पर कश्मीर की बात करता है, जब उसके कब्जे वाले क्षेत्र में जनता को जीने तक का अधिकार नहीं है।

कुछ विश्लेषकों का यह भी कहना है कि यदि भारत ने पीओके में सीधे हस्तक्षेप किया तो यह सीधे सैन्य दखल के रूप में देखा जायेगा और यह दो परमाणु शक्तियों के बीच संघर्ष का खतरा बढ़ा सकता है। वैसे भी पाकिस्तान लंबे समय से आतंकवाद और उकसावे की नीति अपनाता रहा है इसलिए वह किसी भी प्रत्यक्ष कार्रवाई को युद्ध का बहाना बना सकता है। इसलिए भारत को अत्यंत संतुलित लेकिन दृढ़ रणनीति अपनानी होगी।

विश्लेषकों का कहना है कि भारत के पास कई विकल्प हैं। जैसे पीओके की जनता के साथ मानवीय और सामाजिक संपर्क बढ़ाना, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान को घेरना, सीमा पर सुरक्षा और सतर्कता बढ़ाना क्योंकि पाकिस्तान ध्यान भटकाने के लिए आतंकवादी घुसपैठ बढ़ा सकता है। साथ ही पीओके के लोगों के लिए राजनीतिक संदेश देना होगा कि भारत उन्हें अपना नागरिक मानता है और उनके अधिकारों के साथ खड़ा है। विश्लेषकों का कहना है कि जम्मू-कश्मीर विधानसभा में पीओके के लिए आरक्षित 24 सीटों को सक्रिय राजनीतिक प्रक्रिया से जोड़ने पर भी गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए।

बहरहाल, फिलहाल भारत के लिए सबसे प्रभावी रास्ता यही है कि वह धैर्य, कूटनीति और रणनीतिक दबाव का संयोजन अपनाए। पीओके में जो आग भड़की है, वह केवल आर्थिक संकट का परिणाम नहीं, बल्कि दशकों के दमन, शोषण और राजनीतिक अपमान का विस्फोट है। पाकिस्तान की सबसे बड़ी समस्या यह है कि अब उसका झूठ उसके अपने कब्जे वाले क्षेत्र में ही टूट रहा है। जिस जमीन को वह कश्मीर की आजादी का प्रतीक बताता था, वहीं की जनता आज उसके खिलाफ आजादी की आवाज बुलंद कर रही है। हालात साफ संकेत दे रहे हैं कि आने वाले समय में पीओके का भारत के साथ स्वाभाविक जुड़ाव और तेज हो सकता है। स्थानीय जनता जिस तरह पाकिस्तान के खिलाफ आरपार की लड़ाई के मूड़ में दिखाई दे रही है, उससे स्पष्ट है कि इस्लामाबाद के लिए अब केवल बंदूक और दमन के सहारे वहां अपनी पकड़ बनाए रखना आसान नहीं रहेगा। स्थानीय जनता के भीतर पाकिस्तान विरोधी भावना लगातार गहरी हो रही है। यदि पाकिस्तान ने अपनी दमनकारी नीतियां नहीं बदलीं, तो वह दिन दूर नहीं जब पीओके की जनता खुद पाकिस्तान के कब्जे को खुली चुनौती देते हुए भारत के साथ खड़े होने का रास्ता चुन सकती है।

प्रेरणा

सच्चे लोकतंत्र का आधार: जब व्यवस्था में आम आदमी का सम्मान सर्वोपरि हो

लोकतंत्र को दुनिया की सबसे श्रेष्ठ शासन व्यवस्था इसलिए माना जाता है क्योंकि इसका मूल आधार समानता, स्वतंत्रता और न्याय है। लोकतंत्र यह संदेश देता है कि देश का हर नागरिक समान महत्व रखता है, चाहे वह किसी भी पद, वर्ग, जाति, धर्म या आर्थिक स्थिति से संबंधित क्यों न हो। संविधान और कानून की दृष्टि में एक सामान्य व्यक्ति और देश का सर्वोच्च पदाधिकारी दोनों बराबर हैं। लेकिन लोकतंत्र की वास्तविक सफलता केवल संविधान की पुस्तकों में लिखे सिद्धांतों से नहीं मापी जाती, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि व्यवहार में आम नागरिक को कितना सम्मान और अधिकार प्राप्त है। जब किसी व्यवस्था में सबसे कमजोर और साधारण व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और महत्वपूर्ण महसूस करता है, तभी उस लोकतंत्र को वास्तव में सफल माना जा सकता है।

भारतीय चिंतक और अर्थशास्त्री जे.सी. कुमारप्पा का जीवन इसी सोच का प्रतीक था। वे केवल अर्थशास्त्र के विद्वान नहीं थे, बल्कि गांधीवादी विचारधारा के समर्थक और मानव-केंद्रित विकास के पक्षधर भी थे। उनके जीवन से जुड़ा एक प्रसंग लोकतंत्र की आत्मा को समझने में हमारी सहायता करता है। एक बार वे भारत सरकार की एक सलाहकार समिति की बैठक में भाग लेने के लिए घोड़ा-गाड़ी से यात्रा कर रहे थे। रास्ते में सुरक्षा अधिकारियों ने उनकी गाड़ी को रोक दिया क्योंकि उस मार्ग से प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का काफिला गुजरने वाला था। अधिकारियों के लिए यह एक सामान्य प्रशासनिक प्रक्रिया थी, लेकिन कुमारप्पा ने इस पर एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा कर दिया।

उन्होंने पूछा कि यदि लोकतंत्र में सभी नागरिक समान हैं, तो सड़क पर चल रहे एक साधारण गाड़ीवान को क्यों रोका जाए? यदि कोई व्यक्ति अधिक शक्तिशाली है, अधिक संसाधनों का उपयोग करता है और उसकी सुरक्षा के लिए विशेष व्यवस्था की जाती है, तो असुविधा किसे उठानी चाहिए—कमजोर व्यक्ति को या शक्तिशाली को? जब अधिकारियों ने सुरक्षा कारणों का हवाला दिया, तब भी कुमारप्पा ने कहा कि सामान्य समझ यह कहती है कि यदि कोई वाहन दूसरे के लिए खतरा बन सकता है, तो प्रतिबंध उसी पर लगना चाहिए जो खतरा पैदा करने की क्षमता रखता है, न कि उस व्यक्ति पर जो स्वयं कमजोर है।

यह केवल एक तर्क नहीं था बल्कि लोकतंत्र और सामाजिक न्याय का गहरा दर्शन था। कुमारप्पा मानते थे कि किसी भी नीति, कानून और प्रशासनिक व्यवस्था का मूल्यांकन इस आधार पर होना चाहिए कि उसका प्रभाव समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति पर क्या पड़ता है। यदि कोई निर्णय शक्तिशाली लोगों को और अधिक सुविधा देता है लेकिन साधारण नागरिकों के अधिकारों को सीमित करता है, तो वह लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप नहीं माना जा सकता।

आज के समय में लोकतंत्र की चर्चा अक्सर चुनावों, राजनीतिक दलों और सत्ता परिवर्तन तक सीमित होकर रह जाती है। लेकिन लोकतंत्र का वास्तविक अर्थ इससे कहीं व्यापक है। लोकतंत्र केवल मतदान का अधिकार नहीं है, बल्कि सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार भी है। यह सुनिश्चित करना कि हर व्यक्ति को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और न्याय तक समान पहुंच मिले, लोकतंत्र की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। यदि समाज का एक बड़ा वर्ग लगातार उपेक्षित महसूस करता है, तो लोकतंत्र का ढांचा भले ही मजबूत दिखाई दे, उसकी आत्मा कमजोर हो जाती है।

महात्मा गांधी ने भी अपने विचारों में सबसे अंतिम व्यक्ति को केंद्र में रखने की बात कही थी। उनका प्रसिद्ध सिद्धांत था कि कोई भी निर्णय लेने से पहले उस सबसे गरीब और कमजोर व्यक्ति के बारे में सोचो, जिसे उस निर्णय से प्रभावित होना है। यदि निर्णय उसके जीवन में सुधार लाता है, तभी उसे उचित माना जा सकता है। कुमारप्पा ने इसी विचार को अपने आर्थिक और सामाजिक चिंतन का आधार बनाया। वे मानते थे कि विकास का उद्देश्य केवल उत्पादन बढ़ाना या धन अर्जित करना नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को बेहतर बनाना होना चाहिए।

आधुनिक युग में विकास की परिभाषा अक्सर बड़ी परियोजनाओं, ऊंची इमारतों, चौड़ी सड़कों और तकनीकी उपलब्धियों से जोड़ी जाती है। लेकिन विकास का वास्तविक अर्थ तब पूरा होता है जब उसके लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचें। यदि विकास केवल कुछ लोगों की समृद्धि बढ़ाए और बाकी लोग संघर्ष करते रहें, तो वह संतुलित विकास नहीं कहलाएगा। लोकतंत्र की शक्ति इसी में है कि वह विकास और न्याय के बीच संतुलन बनाए रखे।

सार्वजनिक जीवन में भी समानता का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है। सड़कें, पार्क, सरकारी संस्थान और सार्वजनिक सेवाएं सभी नागरिकों के लिए समान रूप से उपलब्ध होनी चाहिए। जब कोई व्यक्ति केवल इसलिए असुविधा झेलता है क्योंकि कोई शक्तिशाली व्यक्ति वहां से गुजरने वाला है, तो यह लोकतांत्रिक आदर्शों पर विचार करने का अवसर देता है। निश्चित रूप से सुरक्षा और प्रशासनिक आवश्यकताओं का अपना महत्व है, लेकिन इनके साथ-साथ नागरिक सम्मान और समानता के सिद्धांतों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

कुमारप्पा का संदेश केवल सरकारों के लिए नहीं था, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए था। उन्होंने यह सिखाया कि किसी भी सभ्य समाज की पहचान इस बात से होती है कि वह अपने कमजोर वर्गों के साथ कैसा व्यवहार करता है। यदि समाज में गरीब, श्रमिक, किसान, बुजुर्ग, महिलाएं और वंचित वर्ग सम्मान और सुरक्षा महसूस करते हैं, तो वह समाज वास्तव में प्रगतिशील कहलाने योग्य है। लेकिन यदि विकास और शक्ति का लाभ केवल कुछ विशेष वर्गों तक सीमित रह जाए, तो असमानता बढ़ने लगती है और सामाजिक संतुलन कमजोर पड़ जाता है।

आज विश्वभर में आर्थिक असमानता, सामाजिक विभाजन और अवसरों की विषमता जैसी चुनौतियां बढ़ रही हैं। ऐसे समय में कुमारप्पा की सोच हमें यह याद दिलाती है कि लोकतंत्र की सफलता केवल आर्थिक आंकड़ों से नहीं मापी जा सकती। किसी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति तब मानी जाएगी जब वहां का सबसे कमजोर नागरिक भी सम्मान, सुरक्षा और अवसर प्राप्त कर सके। यही लोकतंत्र की सबसे बड़ी कसौटी है।

सही कहा था Modi ने... एक एक बूंद पानी के लिए तरस रहा Pakistan, नहरें सूखीं, खेत बंजर हो रहे, शहरों में भी जल संकट

पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने जो रणनीतिक कदम उठाया था उसका असर अब पाकिस्तान के खेतों और उसकी अर्थव्यवस्था पर साफ दिखाई देने लगा है। भले पाकिस्तान पानी की कमी से त्राहि त्राहि कर रहा हो लेकिन भारत के केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल ने साफ कह दिया है कि आने वाले वर्षों में पाकिस्तान को सिंधु नदी प्रणाली से एक बूंद पानी भी नहीं मिलेगा, जबकि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह पहले ही चेतावनी दे चुके हैं कि आतंकवाद को संरक्षण देने वालों तक भारत सिंधु का पानी नहीं पहुंचने देगा। हम आपको बता दें कि सिंधु जल समझौते को स्थगित करने के फैसले ने पाकिस्तान की सबसे बड़ी कमजोरी पर चोट कर दी है। सिंध और बलूचिस्तान में नहरें सूख रही हैं, खेत बंजर होने लगे हैं और किसानों में भारी बेचैनी फैल गई है। पाकिस्तान में हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि वहां के राजनीतिक नेता, किसान संगठन और जल विशेषज्ञ खुलकर चेतावनी दे रहे हैं कि यह केवल जल संकट नहीं, बल्कि “आर्थिक कत्लेआम” की शुरुआत है। सिंध, जहां कराची जैसा आर्थिक केंद्र मौजूद है, वहां पानी की कमी ने पूरे तंत्र को हिला दिया है। बलूचिस्तान के कई इलाके भी अब इसी तबाही की चपेट में हैं। यह संकट पाकिस्तान की लगभग एक तिहाई आबादी को प्रभावित कर रहा है।

देखा जाये तो भारत ने पहलगाम आतंकी हमले के बाद केवल सैन्य जवाब नहीं दिया, बल्कि कूटनीतिक मोर्चे पर भी ऐसी चोट की जिसने इस्लामाबाद की नींद उड़ा दी। ऑपरेशन सिंदूर के बाद नई दिल्ली ने सिंधु जल समझौते को स्थगित करके दुनिया को संदेश दिया कि आतंक फैलाने वालों को अब हर मोर्चे पर कीमत चुकानी होगी। हम आपको बता दें कि मोदी सरकार अब अपने इरादे को केवल राजनीतिक बयान तक सीमित नहीं रख रही, बल्कि उसे जमीन पर उतारने की तैयारी भी तेज कर चुकी है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल ने साफ शब्दों में कहा है कि आने वाले वर्षों में पाकिस्तान को सिंधु नदी प्रणाली से एक बूंद पानी भी नहीं मिलेगा। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश पर सरकार सीमा पार पानी के प्रवाह को रोकने के लिए हर संभव कदम उठा रही है। पाटिल ने यह भी कहा कि गृह मंत्री अमित शाह खुद इस पूरी प्रक्रिया की निगरानी कर रहे हैं। वहीं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने दो टूक कहा कि भारत अब आतंकवाद को संरक्षण देने वालों तक सिंधु का पानी नहीं पहुंचने देगा। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर और सिंधु जल संधि को रोकने का फैसला दुनिया को यह बताने के लिए काफी है कि भारत अब शांति की भाषा न समझने वालों को उसी की भाषा में जवाब देना जानता है।

दूसरी ओर, जल की कमी का असर पाकिस्तान के सबसे महत्वपूर्ण सिंचाई ढांचे सुक्कुर बैराज पर साफ दिखाई दे रहा है। सिंधु नदी पर बना यह विशाल ढांचा लाखों एकड़ खेती को जीवन देता है। लेकिन अब यहां से निकलने वाली नहरों में पानी तेजी से घट रहा है। उत्तर पश्चिम नहर में 64 प्रतिशत से अधिक कमी दर्ज की गई है। राइस नहर लगभग 38 प्रतिशत घाटे में चल रही है, जबकि दादू नहर की हालत सबसे भयावह है, जहां 82 प्रतिशत तक पानी कम हो चुका है।

स्थिति इतनी गंभीर हो चुकी है कि कई नहरों में तय हिस्से का केवल एक चौथाई पानी पहुंच रहा है। दादू नहर को जहां लगभग पांच हजार क्यूसेक पानी मिलना चाहिए था, वहां केवल आठ सौ साठ क्यूसेक पानी पहुंच रहा है। उत्तर पश्चिम नहर को छह हजार से अधिक क्यूसेक के बदले केवल 2100 क्यूसेक पानी मिल रहा है। किसान धान की नर्सरी तक तैयार नहीं कर पा रहे हैं। खेत सूख रहे हैं और गांवों में बेचैनी फैल रही है।

यहां एक और बात यह भी है कि पाकिस्तान के भीतर ही पानी की लूट और असमान वितरण ने भी आग में घी डाल दिया है। सिंध सिंचाई विभाग के आंकड़े बताते हैं कि पंजाब अपने तय हिस्से से 21 प्रतिशत अधिक पानी खींच रहा है। तौंसा बैराज भी तय सीमा से ज्यादा पानी ले रहा है। दूसरी तरफ निचले इलाकों में नहरें सूख रही हैं। इसका मतलब साफ है कि पाकिस्तान का आंतरिक ढांचा भी अब टूटने लगा है।

यही वजह है कि वहां राजनीतिक युद्ध छिड़ चुका है। जमात-ए-इस्लामी ने पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की सिंध सरकार को पानी संकट के लिए जिम्मेदार ठहराया है। वहीं पीपुल्स पार्टी संघीय तंत्र और जल प्रबंधन एजेंसियों पर हमला बोल रही है। पार्टी के वरिष्ठ नेता निसार अहमद खुह्रो ने खुलकर कहा है कि सिंध देश की 67 प्रतिशत कृषि उपज पैदा करता है, फिर भी उसे उसके हिस्से का पानी नहीं दिया जा रहा। उन्होंने खरीफ मौसम में पानी कटौती को सिंध का “आर्थिक कत्लेआम” बताया।

दरअसल पाकिस्तान की सबसे बड़ी कमजोरी अब उजागर हो रही है। उसकी पूरी कृषि व्यवस्था सिंधु नदी प्रणाली पर टिकी हुई है। वहां की अर्थव्यवस्था, खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण रोजगार का विशाल हिस्सा इसी पानी पर निर्भर है। भारत ने पहली बार इस कमजोरी को रणनीतिक हथियार में बदल दिया है। यह केवल पानी रोकने का मामला नहीं, बल्कि पाकिस्तान को यह समझाने की कोशिश है कि आतंकवाद की कीमत केवल सीमा पर नहीं, बल्कि देश की आंतरिक स्थिरता पर भी चुकानी पड़ेगी।

रणनीतिक दृष्टि से देखें तो भारत का यह कदम बेहद महत्वपूर्ण है। दशकों तक पाकिस्तान आतंक को राज्य नीति की तरह इस्तेमाल करता रहा, जबकि भारत केवल सैन्य जवाब तक सीमित था। लेकिन अब तस्वीर बदल चुकी है। नई दिल्ली ने जल, कूटनीति और आर्थिक दबाव को एक साथ जोड़कर बहुस्तरीय रणनीति तैयार की है। इसका असर केवल आज के संकट तक सीमित नहीं रहेगा। आने वाले महीनों में यदि पाकिस्तान के भीतर पानी को लेकर प्रांतीय संघर्ष और बढ़ते हैं, तो वहां राजनीतिक अस्थिरता, कृषि संकट और आर्थिक दबाव और गहरा सकता है।

बहरहाल, सबसे बड़ा संदेश यही है कि भारत अब केवल जवाब देने वाला देश नहीं रहा, बल्कि वह दुश्मन की सबसे कमजोर नस पहचानकर वहां चोट करने की नीति पर चल रहा है।

अभियान

राहु-केतु के रहस्यमयी प्रभाव और उनके दिव्य तीर्थ: जहां आस्था बनती है संकटों से मुक्ति का मार्ग

वैदिक ज्योतिष में नौ ग्रहों का विशेष महत्व बताया गया है, जिनमें राहु और केतु को सबसे रहस्यमयी और प्रभावशाली ग्रहों में गिना जाता है। यद्यपि खगोल विज्ञान की दृष्टि से राहु और केतु भौतिक ग्रह नहीं हैं, फिर भी ज्योतिष शास्त्र में इनका प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। इन्हें छाया ग्रह कहा जाता है और माना जाता है कि ये मनुष्य के जीवन में अचानक होने वाले बदलावों, अप्रत्याशित घटनाओं, मानसिक भ्रम, कर्मफल, आध्यात्मिक जागरण और जीवन की महत्वपूर्ण चुनौतियों को प्रभावित करते हैं। कई बार व्यक्ति जीवन में सब कुछ होते हुए भी असंतोष, असफलता, तनाव और बाधाओं का सामना करता है। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार इसके पीछे राहु और केतु की प्रतिकूल स्थिति भी एक कारण हो सकती है।

राहु को इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, भौतिक आकर्षण, भ्रम और अचानक मिलने वाली सफलताओं का कारक माना जाता है, जबकि केतु को वैराग्य, आध्यात्मिकता, मोक्ष, आत्मचिंतन और कर्मों के गहरे प्रभाव से जोड़ा जाता है। जब ये दोनों ग्रह अनुकूल स्थिति में होते हैं तो व्यक्ति को असाधारण सफलता, प्रसिद्धि और आध्यात्मिक उन्नति प्रदान कर सकते हैं, लेकिन प्रतिकूल होने पर जीवन में संघर्ष, भ्रम, मानसिक अशांति, पारिवारिक समस्याएं और आर्थिक चुनौतियां भी उत्पन्न कर सकते हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में राहु-केतु से जुड़े विशेष धार्मिक अनुष्ठानों और पूजा-पाठ की परंपरा सदियों से चली आ रही है।

भारत में ऐसे अनेक प्राचीन मंदिर हैं जो राहु और केतु से विशेष रूप से जुड़े हुए हैं। इन मंदिरों में श्रद्धालु दूर-दूर से पहुंचते हैं और ग्रह दोषों की शांति के लिए विशेष पूजा-अर्चना करवाते हैं। इन तीर्थस्थलों की महिमा केवल ज्योतिषीय मान्यताओं तक सीमित नहीं है, बल्कि ये भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक विरासत और धार्मिक आस्था के अद्भुत केंद्र भी हैं। माना जाता है कि यहां श्रद्धा और विश्वास के साथ की गई प्रार्थना व्यक्ति को मानसिक शक्ति, आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है।

आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले में स्थित श्रीकालहस्तीश्वर मंदिर राहु-केतु दोष निवारण के लिए देश के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में गिना जाता है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, जिन्हें यहां कालहस्तीश्वर के रूप में पूजा जाता है। पंचभूत स्थलों में यह मंदिर वायु तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी धार्मिक महत्ता इतनी अधिक है कि इसे दक्षिण भारत का कैलाश भी कहा जाता है। यहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु राहु-केतु पूजा कराने आते हैं। मान्यता है कि कालसर्प दोष, राहु महादशा, केतु महादशा तथा अन्य ग्रह संबंधी बाधाओं से परेशान लोगों को यहां विशेष लाभ प्राप्त होता है। मंदिर की भव्य वास्तुकला, प्राचीन इतिहास और आध्यात्मिक वातावरण श्रद्धालुओं को अद्भुत शांति का अनुभव कराते हैं। कहा जाता है कि यहां की गई पूजा व्यक्ति के जीवन में नई आशा और सकारात्मक परिवर्तन का मार्ग खोलती है।

तमिलनाडु के कुंभकोणम के निकट स्थित तिरुनागेश्वरम नागनाथर मंदिर राहु ग्रह से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। यह मंदिर भगवान शिव और देवी पार्वती को समर्पित है। यहां भगवान शिव को नागनाथर तथा देवी को पिरैसूदी अम्मन के रूप में पूजा जाता है। नवग्रह मंदिरों में इस स्थान का विशेष महत्व है क्योंकि इसे राहु का प्रमुख स्थल माना जाता है। इस मंदिर की सबसे अनूठी विशेषता यहां होने वाला राहु अभिषेक है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि इस विशेष पूजा में भाग लेने से राहु के प्रतिकूल प्रभाव कम होते हैं और जीवन में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं। मंदिर की विशाल संरचना, ऊंचे गोपुरम और प्राचीन स्थापत्य कला इसे दक्षिण भारत के प्रमुख धार्मिक स्थलों में शामिल करती है। तमिलनाडु के कीझापेरुमपल्लम में स्थित श्री नागनाथस्वामी केतु मंदिर केतु ग्रह की शांति के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यह मंदिर अपेक्षाकृत सरल संरचना वाला होने के बावजूद अत्यधिक आध्यात्मिक महत्व रखता है। यहां भगवान शिव की पूजा नागनाथस्वामी के रूप में की जाती है। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार जिन लोगों की कुंडली में केतु प्रतिकूल प्रभाव दे रहा हो, उन्हें इस मंदिर में दर्शन और पूजा करने की सलाह दी जाती है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि यहां की गई प्रार्थना मानसिक भ्रम को दूर करने, आध्यात्मिक चेतना को बढ़ाने और जीवन में संतुलन स्थापित करने में सहायक होती है। महाशिवरात्रि और अन्य प्रमुख पर्वों के अवसर पर यहां विशेष धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें हजारों भक्त भाग लेते हैं।

तेलंगाना में स्थित प्रसिद्ध राहु-केतु मंदिर भी ग्रह दोषों से राहत पाने की इच्छा रखने वाले लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण आस्था केंद्र है। यह मंदिर अपने शांत, स्वच्छ और आध्यात्मिक वातावरण के लिए जाना जाता है। यहां आने वाले श्रद्धालु विशेष पूजा और अनुष्ठान करवाकर अपने जीवन की समस्याओं के समाधान की कामना करते हैं। माना जाता है कि यहां की सकारात्मक ऊर्जा व्यक्ति के मन से भय, तनाव और नकारात्मक विचारों को दूर करने में सहायता करती है। मंदिर परिसर में ध्यान और साधना करने वाले भक्तों की संख्या भी काफी अधिक होती है।

चेन्नई के गेरुगमबक्कम क्षेत्र में स्थित श्री नीलकंडेश्वर मंदिर भी राहु-केतु से संबंधित धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र है। यहां भगवान शिव को नीलकंडेश्वरार और देवी पार्वती को कामाक्षी के रूप में पूजा जाता है। मंदिर परिसर में केतु को समर्पित एक विशेष स्थान है जहां भक्त ग्रह दोषों की शांति के लिए अनुष्ठान करते हैं। धार्मिक मान्यता है कि यहां नियमित पूजा करने से जीवन की अनेक बाधाएं दूर होती हैं और व्यक्ति को आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है। मंदिर का वातावरण अत्यंत शांत और दिव्य माना जाता है, जो श्रद्धालुओं को आत्मिक शांति का अनुभव कराता है।

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित राहु मंदिर भी अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। हिमालय की गोद में बसे इस मंदिर का प्राकृतिक सौंदर्य और आध्यात्मिक वातावरण इसे अन्य मंदिरों से अलग बनाता है। यहां पहुंचने वाले भक्त न केवल राहु दोष की शांति के लिए पूजा करते हैं, बल्कि ध्यान और साधना के माध्यम से मानसिक शांति भी प्राप्त करते हैं। पहाड़ों की निर्मल वायु, शांत वातावरण और धार्मिक ऊर्जा व्यक्ति को जीवन की भागदौड़ से दूर आत्मचिंतन का अवसर प्रदान करती है। माना जाता है कि यहां की गई प्रार्थना मन को स्थिरता और आत्मविश्वास प्रदान करती है।

भारतीय ज्योतिष में राहु और केतु को केवल भय या संकट का कारण नहीं माना गया है। वास्तव में ये दोनों ग्रह व्यक्ति को जीवन के गहरे सत्य से परिचित कराने वाले शिक्षक माने जाते हैं। राहु जहां व्यक्ति की इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं की परीक्षा लेता है, वहीं केतु उसे भौतिक संसार से ऊपर उठकर आत्मज्ञान की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। इसलिए कई विद्वान ज्योतिषी इन ग्रहों को आध्यात्मिक परिवर्तन का माध्यम भी मानते हैं। जब व्यक्ति कठिन परिस्थितियों से गुजरता है, तब वह स्वयं को समझने, अपने कर्मों का मूल्यांकन करने और ईश्वर के प्रति अधिक समर्पित होने की ओर अग्रसर होता है।

इन मंदिरों में आयोजित होने वाले विशेष अनुष्ठानों का उद्देश्य केवल ग्रह दोषों की शांति करना नहीं होता, बल्कि श्रद्धालुओं के भीतर सकारात्मक सोच, आत्मबल और आध्यात्मिक चेतना का विकास करना भी होता है। पूजा-पाठ, मंत्रोच्चार, अभिषेक और ध्यान जैसी धार्मिक प्रक्रियाएं व्यक्ति को मानसिक रूप से मजबूत बनाती हैं। जब कोई व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ इन धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेता है, तो उसे अपने भीतर एक नई ऊर्जा और आशा का अनुभव होता है।

भारतीय संस्कृति में तीर्थयात्रा का महत्व केवल धार्मिक कर्तव्य तक सीमित नहीं है। तीर्थयात्रा व्यक्ति को आत्मचिंतन, आत्मसंयम और आध्यात्मिक विकास का अवसर भी प्रदान करती है। राहु-केतु से जुड़े ये मंदिर इसी परंपरा के जीवंत उदाहरण हैं। यहां आने वाले लाखों श्रद्धालु केवल ग्रहों की शांति के लिए नहीं, बल्कि मानसिक सुकून, आत्मिक संतुलन और जीवन में सकारात्मक दिशा प्राप्त करने के लिए भी दर्शन करते हैं। आज के तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धी जीवन में लोग अनेक प्रकार की मानसिक, पारिवारिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ऐसे समय में आस्था और आध्यात्मिकता व्यक्ति को भीतर से मजबूत बनाने का कार्य करती है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

पीएम मोदी के 12 साल: स्वामित्व योजना के दूसरे चरण में गुजरात नंबर 1, देश के आधे से अधिक प्रॉपर्टी कार्ड गुजरात में बने

▸▸ योजना के दूसरे चरण (2021-22) में पूरे देश में बने 32.35 लाख प्रॉपर्टी काड्र्स में से अकेले गुजरात ने रिकॉर्ड 18.50 लाख कार्ड तैयार कर कायम की मिसाल

▸▸ राज्य में 14,900 ड्रोन उड़ानों के जरिए 11,511 गांवों का सटीक मानचित्रण और प्रमाणीकरण पूरा

▸▸ गुजरात में मेहसाणा (1.66 लाख) और अहमदाबाद (1.53 लाख) जिले प्रॉपर्टी कॉर्ड जारी करने में सबसे आगे

▸▸ प्रॉपर्टी कार्ड के आधार पर ग्रामीणों को 50 लाख तक के बैंक ऋण हुए स्वीकृत, ग्रामीण उद्यम को मिली नई रफ्तार

गांधीनगर : पिछले 12 वर्षों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने ग्रामीण सशक्तिकरण की दिशा में जो बड़े कदम उठाए हैं, उनमें 'प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना' एक 'गेमचेंजर' के रूप में सामने आई है। दशकों से गांवों में आवासीय संपत्तियों के सटीक कागजात न होने के कारण ग्रामीण अपने ही घरों के कानूनी अधिकारों और वित्तीय लाभों से वंचित थे।

आज इस योजना के ज़रिए न सिर्फ ग्रामीणों को उनका असली हक मिल रहा है, बल्कि इस महाअभियान में गुजरात ने पूरे देश में 'नंबर 1' बनकर एक नया इतिहास भी रच दिया है। राज्य की यह उपलब्धि इसलिए भी खास है, क्योंकि योजना के दूसरे चरण में देश भर में जितने भी प्रॉपर्टी कार्ड बने हैं, उनमें से आधे से अधिक (50% से ज्यादा) की हिस्सेदारी अकेले गुजरात की रही है।

14,900 ड्रोन उड़ानें और 18.50 लाख से अधिक प्रॉपर्टी कार्ड, गुजरात ने 'स्वामित्व योजना' में बनाया राष्ट्रीय रिकॉर्ड

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के कुशल नेतृत्व में गुजरात ने 'प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना' को अभूतपूर्व गति देते हुए पूरे देश के सामने एक 'रोल मॉडल' पेश किया है। अत्याधुनिक ड्रोन तकनीक से ग्रामीण संपत्तियों का सटीक मानचित्रण कर, राज्य सरकार द्वारा अब तक 18.50 लाख से अधिक ग्रामीण संपत्तियों के वैधानिक 'प्रॉपर्टी कार्ड' तैयार किए जा चुके हैं।

वर्ष 2021-22 में इस योजना के दूसरे चरण से जुड़ने वाला गुजरात आज अपने बेहतरीन प्रबंधन के दम पर राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान पर पहुँच गया है। आँकड़ों पर नज़र डालें तो इस चरण में देश भर के 58,197 गांवों में ड्रोन उड़ानें हुईं और कुल 32,35,260 प्रॉपर्टी कार्ड बने। इनमें से अकेले गुजरात ने 14,900 गांवों में ड्रोन उड़ान और 11,511 गांवों का प्रमाणीकरण कर देश में सर्वाधिक 18,50,614 कार्ड तैयार किए हैं।

मेहसाणा और अहमदाबाद अव्वल, 14,900 ड्रोन उड़ानों से पारदर्शी हुई व्यवस्था

इस महाअभियान को सफल बनाने में भारतीय सर्वेक्षण विभाग, गुजरात राजस्व विभाग और गुजरात पंचायती राज विभाग का बेहतरीन समन्वय रहा है। ड्रोन सर्वेक्षण और GIS आधारित मैपिंग ने ग्राम नियोजन को पूरी तरह पारदर्शी बना दिया है। इस प्रक्रिया में ज़िला स्तर पर मेहसाणा (1,66,504 कार्ड) और अहमदाबाद (1,53,125 कार्ड) सबसे आगे हैं। इसके अलावा खेड़ा, बनासकांठा और आणंद में भी 1-1 लाख से अधिक कार्ड तैयार किए गए हैं। पारदर्शी सत्यापन के बाद कार्ड जारी होने से पीढ़ियों से चले आ रहे भूमि विवाद और अदालती मामले लगभग खत्म हो गए हैं।

वित्तीय समावेशन की नई लहर, प्रॉपर्टी कार्ड पर मिल रहा 50 लाख तक के लोन की सुविधा

इस योजना ने ग्रामीण संपत्तियों को एक 'वित्तीय परिसंपत्ति' में बदल दिया है। कानूनी मान्यता मिलने के बाद अब नागरिक अपने प्रॉपर्टी कार्ड का उपयोग कर बैंकों से आसानी से लोन की सुविधा प्राप्त कर रहे हैं। गुजरात में इस कार्ड के आधार पर 50 लाख तक के बड़े बैंक लोन भी स्वीकृत किए गए हैं।

इससे गांवों में व्यवसाय, शिक्षा और आजीविका के नए अवसर पैदा हुए हैं, जिसने महिलाओं और वंचित वर्गों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में एक 'गेमचेंजर' की भूमिका निभाई है। योजना को जन-जन तक पहुँचाने के लिए राज्यभर में 14,000 से अधिक ग्राम सभाओं का आयोजन किया गया है, जो 'डिजिटल और आत्मनिर्भर ग्रामीण भारत' के विजन को साकार कर रहा है।

गुजरात सरकार 15 जून को नई औद्योगिक नीति 2026 का करेगी अनावरण

माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल एवं माननीय उपमुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी करेंगे राज्य की नई औद्योगिक नीति का शुभारंभ

गांधीनगर : गुजरात सरकार 15 जून को अपनी बहुप्रतीक्षित औद्योगिक नीति 2026 का अनावरण करने जा रही है। इस नई नीति का शुभारंभ माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा माननीय उपमुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की गरिमामय उपस्थिति में गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में किया जाएगा।

नई औद्योगिक नीति से राज्य में औद्योगिक विकास को गति देने, निवेश आकर्षित करने, नवाचार को बढ़ावा देने, रोजगार के नए अवसर सृजित करने तथा भारत के अग्रणी औद्योगिक एवं निवेश गंतव्य के रूप में गुजरात की स्थिति को और सुदृढ़ करने के लिए एक व्यापक एवं दूरदर्शी रोडमैप मिलने की अपेक्षा है।

गुजरात की प्रगतिशील औद्योगिक विकास यात्रा और निवेशक-अनुकूल प्रशासनिक व्यवस्था को आगे बढ़ाते हुए, आगामी नीति में ईज़ ऑफ़ डूइंग बिज़नेस को और बेहतर बनाने, एडवांस्ड मैन्युफ़ैक्चरिंग को प्रोत्साहित करने, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को समर्थन देने, प्रौद्योगिकी अपनाने को बढ़ावा देने तथा उभरते एवं उच्च-विकास वाले क्षेत्रों में निवेश को सुविधाजनक बनाने पर विशेष ध्यान दिए जाने की संभावना है।

वर्षों से गुजरात विश्वस्तरीय आधारभूत संरचना, सक्रिय प्रशासन, मजबूत कनेक्टिविटी और कुशल मानव संसाधन के बल पर घरेलू एवं वैश्विक निवेशकों की पसंदीदा निवेश स्थली के रूप में स्थापित हुआ है।

नई औद्योगिक नीति गुजरात की मौजूदा औद्योगिक शक्तियों को और मजबूत करते हुए राज्य में निवेश, उत्पादन और रोजगार सृजन को नई गति प्रदान करेगी। साथ ही, यह नीति गुजरात की आर्थिक प्रगति को तेज करने, निवेशकों के लिए राज्य की आकर्षण क्षमता बढ़ाने तथा राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर उसकी औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता को और सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अब अखबार में खाना पैक करना अपराध है, एफएसएसएआई ने इसे पूरे देश में प्रतिबंधित कर दिया है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

मुंबई में एक वड़ापाउ विक्रेता ने वड़ापाउ को अखबार में लपेटकर ग्राहक को दे दिया। इस पर बीएमसी और एफएसएसएआई की पश्चिम जोन टीम ने संयुक्त कार्रवाई की। इस घटना के बाद ट्रकों, स्टॉलों, क्लाउड किचन, कैटरर्स और हॉकरों को अखबार में खाद्य पदार्थ पैक न करने का आदेश जारी किया गया है। इसके चलते अब से पूरे भारत में अखबार में पैक किए गए खाद्य पदार्थों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इस मामले को गंभीरता से लेते हुए भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने यह आदेश जारी किया है। इसमें यह प्रावधान भी है कि आदेश का पालन न करने वालों को जेल भी हो सकती है। अखबार में इस्तेमाल होने वाली स्याही अगर खाद्य पदार्थों में मिल जाए तो स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकती है, इसीलिए यह आदेश

जारी किया गया है।

ऐसे खाद्य पदार्थ न केवल आपको बीमार

कर सकते हैं बल्कि कैंसर का कारण भी बन सकते हैं। वड़ा पाव, समोसे, पकौड़े जैसे तैलीय व्यंजन अखबार में लपेटकर परोसे जाते हैं और गर्म होने के कारण अखबार पर लगी स्याही को सोख लेते हैं, जो लोगों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। अखबारों में इस्तेमाल होने वाली स्याही में सीसा जैसे कई रसायन और धातुएं होती हैं। सीसा कैंसरकारक होता है और अगर इसका सेवन किया जाए तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। महाराष्ट्र के खाद्य एवं औषधि प्रशासन (FDA) के नए आयुक्त तुकाराम मुंडे ने अखबारों में खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग के खिलाफ कार्रवाई की, जिसके बाद अब FSSAI ने भी पूरे भारत में अखबारों में खाद्य पदार्थों को परोसने पर प्रतिबंध लगा दिया है।

सूरत में वाल्मीकि समाज की बैठक हुई नए पदाधिकारियों का चुनाव हुआ

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

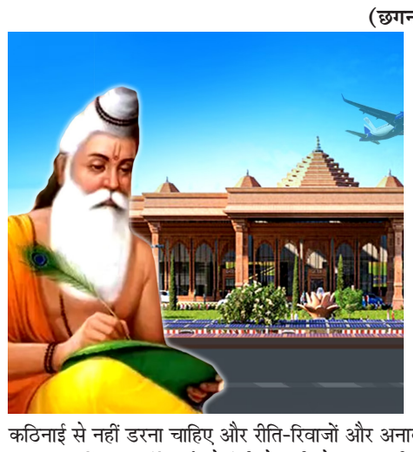

गुजरात प्रदेश वाल्मीकि समाज की एक बैठक 13 जून, 2026 को सूरत मुखम में प्रदेश अध्यक्ष भाई लाल बी. वैष्णव की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इसमें सूरत शहर के सामाजिक कार्यकर्ता छगनलाल डी. मेवाड़ा उपस्थित थे, जिन्होंने समाज से कठिनाइयों का सामना करने और बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि समाज को किसी भी कठिनाई से नहीं डरना चाहिए और रीति-रिवाजों और अनावश्यक खर्चों में कटौती करने का आग्रह किया। कांतिभाई सोलंकी ने सभी से समाज की प्रगति के लिए मिलकर काम करने का आह्वान किया। अश्विनभाई वैष्णव और शशिकांत सोलंकी भी उपस्थित थे। भाई लाल वैष्णव ने मुख्य मंच से कहा कि समाज को केवल नौकरियों पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि लघु एवं लघु उद्योग भी स्थापित करने चाहिए। बैठक में उपस्थित वडोदरा शहर के कार्यकर्ताओं ने भी समाज के लाभों और रीति-रिवाजों पर चर्चा की।

वडोदरा स्थित गुजरात प्रदेश वाल्मीकि समाज के पदाधिकारियों के रूप में निम्नलिखित व्यक्तियों को निर्वाचित किया गया है। उपाध्यक्षः- हरीशभाई छगनभाई संपत, उपाध्यक्षः- मनहरभाई लल्लूभाई सोलंकी, उपाध्यक्षः- विनोदभाई रमनभाई सोलंकी, महासचिवः- नरेशभाई धनजीभाई सोलंकी निर्वाचित हुए हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गिफ्ट सिटी में हेक्सावेयर टेक्नोलॉजीज के नए डिलीवरी सेंटर का उद्घाटन किया

▸▸ हेक्सावेयर टेक्नोलॉजीज गुजरात को वैश्विक टेक्नोलॉजी हब के तौर पर और मजबूत बनाएगी

▸▸ कंपनी का निवेश उच्च कौशल वाले युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित करेगा

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को गांधीनगर स्थित गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट सिटी) में हेक्सावेयर टेक्नोलॉजीज के नए डिलीवरी सेंटर का उद्घाटन किया। गिफ्ट सिटी के प्रज्ञा-2 भवन के 7वें और 8वें तल पर शुरू हुआ यह अत्याधुनिक सेंटर गुजरात के टेक्नोलॉजी इकोसिस्टम के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

इस सेंटर के शुरू होने से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), ऑटोमेशन और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में नए अवसरों का सृजन होगा, साथ ही उच्च कौशल वाले युवाओं के लिए रोजगार के नए द्वार खुलेंगे।

बता दें कि हेक्सावेयर टेक्नोलॉजीज दुनिया की अग्रणी डिजिटल और टेक्नोलॉजी सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनियों में से एक है। यह कंपनी वैश्विक स्तर पर बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं, स्वास्थ्य, बीमा, विनिर्माण, रिटेल, पर्यटन और परिवहन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी-आधारित सॉल्यूशन प्रदान करती है। दुनिया के कई देशों में कामकाज का संचालन करने वाली हेक्सावेयर टेक्नोलॉजीज में अगले तीन वर्षों में लगभग 1000 उच्च कौशल वाले रोजगार का सृजन करने की क्षमता है।

गिफ्ट सिटी में हेक्सावेयर के डिलीवरी सेंटर की स्थापना गुजरात के टेक्नोलॉजी और नवाचार-आधारित विकास को और मजबूत बनाएगी।

इस अवसर पर गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, हेक्सावेयर टेक्नोलॉजीज के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) सह कार्यकारी निदेशक श्री आर. श्रीकृष्णा सहित कंपनी के मुख्य वित्तीय अधिकारी (सीएफओ) श्री विकास कुमार जैन सहित कई अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

गुजरात में शराबबंदी के दावों के बीच बेरोकटोक शराब का कारोबार हो रहा है, इसके लिए कौन जिम्मेदार है?

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

गुजरात में, जहाँ गुजरात के सपूत महात्मा गांधी ने शराबबंदी की थी, आज शायद ही कोई ऐसा शहर या गाँव बचेगा जहाँ देसी और विदेशी शराब न मिलती हो। फिर भी, हम सबके लिए सुरक्षा का नारा लगाते हुए गुजरात मॉडल की प्रशंसा कर रहे हैं, जो हास्यास्पद है। इन लोगों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि जहाँ लोगों की सोचने-समझने की क्षमता नष्ट हो जाती है, वहाँ शासक विकास के नाम पर उसे लूटते हैं, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

गुजरात से आज की ताजा खबर यह है कि गांधीनगर स्थित राज्य निगरानी प्रकोष्ठ की टीम ने नाडियाड-पेटलाड मार्ग पर वैलेटवा के पास नहर के किनारे तीन लोगों के एक गिरोह से 5,07,644 रुपये मूल्य की 1033 बोतलें विदेशी शराब जब्त की हैं। इनमें भाजपा के खेड़ा जिला पंचायत सदस्य सहित दो अन्य शराब तस्कर भी शामिल हैं। टीम ने फरार खेड़ा जिला पंचायत सदस्य प्रफुल उर्फ स्वामी उमेद परमार समेत दो अन्य शराब तस्करों की गिरफ्तारी के प्रयास भी शुरू कर दिए हैं।

यह गांधी नगर के गुजरात में हर जगह बिकने वाली शराब के बारे में है। इतनी शराब आ रही है, बिक रही है, पी जा रही है, फिर भी आज तक क्या किसी आईपीएस, एसीपी, डीसीपी, एसपी या पीआई जैसे उच्च अधिकारियों पर कहीं कोई हमला हुआ है? नहीं, क्योंकि ऐसे उच्च अधिकारियों को गांधीनगर और दिल्ली में बैठे अपने गुरुओं से "प्रशासन" की चर्चा करने के बाद गुजरात और खासकर सूरत में पोस्टिंग मिलती है। और फिर कहा जाता है कि ये उच्च अधिकारी, जो अपने गुरुओं को पैसों से भरे बैग देकर आए हैं, जब सेवानिवृत्त होते हैं या कहीं और तबादला हो जाते हैं, तो अपने साथ पैसों से भरे बैग ले जाते हैं। और यही कारण है कि गुजरात में अवैध शराब का धंधा बेकाबू हो गया है। यहां यह बताना जरूरी है कि कुछ ही दिन पहले सूरत में उधना पुलिस स्टेशन के अंतर्गत रोड नंबर 6 पर 21 वर्षीय भाजपा कार्यकर्ता जय दलाल की हत्या कर दी गई थी। और इस हत्या के बाद महिलाओं ने शराब की दुकान पर धावा बोल दिया और छापा मारा। उधना पुलिस स्टेशन के पीआई और अन्य वरिष्ठ अधिकारी स्तब्ध रह गए और उन्होंने दो हेड कांस्टेबल, जिग्नेश अंबालाल और आनंद कुमार रत्नाभाई का तत्काल प्रभाव से पुलिस मुख्यालय में तबादला कर दिया और मामला सुलझ गया। तो यहाँ सवाल उठता है कि जब किसी राजनीतिक कार्यकर्ता की खुलेआम हत्या हो जाती है, तो क्या सिर्फ हेड कांस्टेबलों का तबादला करके संतुष्ट हो जाना उचित है? क्या किसी अन्य अधिकारी की कोई जिम्मेदारी नहीं है? सिर्फ कनिष्ठ कर्मचारियों को ही बलि का बकरा क्यों बनाया गया, पीएसआई, पीआई या उच्च अधिकारियों को क्यों नहीं? क्या उनका (हेड कांस्टेबलों का) शराब तस्करों के साथ कोई संबंध था? क्या उनका धंधा उनके संरक्षण में चल रहा था? ऐसे कई सवाल उठ रहे हैं, लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि सूरत समेत राज्य के छोटे-बड़े गांवों में शराब का दानव बेखौफ नाच रहा है और कई परिवारों को निगल रहा है, फिर भी सरकार सिर्फ सुरक्षा का अलार्म बजा रही है। ऐसे समय में, अगर पूरी जिम्मेदारी लेनी है, तो

गृह मंत्री, डीजीपी, हर शहर के पुलिस आयुक्त और ग्रामीण क्षेत्रों के डीवाईएसपी की जिम्मेदारी बनती है। उन्हें निलंबित किया जाना चाहिए, तबादला किया जाना चाहिए या कड़ी सजा दी जानी चाहिए, तभी अन्य अधिकारी शराब तस्करों की अनदेखी करेंगे। लेकिन इन सब के बजाय, साधारण हेड कांस्टेबलों या साधारण पीएसआई को बदलने से शराब की बिक्री नहीं रुकेगी और आईपीएस अधिकारी भ्रष्टाचार की ओर मुड़कर नहीं देखेंगे।

भावनगर मंडल पर क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित,सतर्कता जागरूकता, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व पर दिया गया विशेष जोर

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल पर कर्मचारियों के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम (Capacity Building Training Programme) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य कर्मचारियों में सतर्कता जागरूकता, सत्यनिष्ठा, आचरण नियमों के प्रति समझ विकसित करना तथा कार्यालयीन कार्यों में पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करना था।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सतर्कता विभाग के विजिलेंस इंस्पेक्टर श्री प्रदीप राउत एवं श्री संतोष साहू ने कर्मचारियों को सतर्कता संबंधी नियमों, प्रक्रियाओं तथा व्यवहारिक पहलुओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की। अपने संबोधन में विजिलेंस इंस्पेक्टरों ने कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे अपने कार्यों का निष्पादन सदैव निर्धारित नीतियों एवं नियमों के अनुरूप करें तथा प्रत्येक स्तर पर सतर्कता एवं पारदर्शिता बनाए रखें। उन्होंने कहा कि नियमों की समुचित जानकारी और उनका प्रभावी अनुपालन न केवल प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाता है, बल्कि कर्मचारियों को अनावश्यक कठिनाइयों एवं असुविधाओं से भी बचाता है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सहायक कार्मिक अधिकारी श्री संतोष कुमार वर्मा ने विभिन्न व्यवहारिक उदाहरणों के माध्यम से कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कर्मचारियों को अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी, पारदर्शिता एवं सतर्कता के साथ करने का संदेश दिया।

श्री वर्मा ने सुझाव दिया कि मंडल के प्रमुख स्टेशनों एवं कार्यस्थलों पर, जहाँ बड़ी संख्या में कर्मचारी कार्यरत हैं, ऐसे प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाने चाहिए। इससे कर्मचारियों को नियमों एवं प्रक्रियाओं की अद्यतन जानकारी प्राप्त होगी तथा वे अपने कार्यों का निष्पादन अधिक दक्षता एवं जवाबदेही के साथ कर सकेंगे।

कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारियों ने इस उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक प्रशिक्षण के आयोजन के लिए कार्मिक विभाग एवं सतर्कता विभाग की सराहना की तथा भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के नियमित आयोजन की आवश्यकता व्यक्त की।

कार्यक्रम का सफल संचालन मुख्य कर्मचारी एवं कल्याण निरीक्षक श्री शैलेश कुमार द्वारा किया गया।

विश्व रक्तदान दिवस के उपलक्ष्य में महेसाणा रेलवे स्टेशन पर रक्तदान शिविर का आयोजन

'विश्व रक्तदान दिवस' के उपलक्ष्य में महेसाणा रेलवे स्टेशन पर आज एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। यह सराहनीय पहल महेसाणा रेलवे स्टाफ के 'रेलवे सेवार्थ ग्रुप' द्वारा की गई, जिसमें रेल कर्मियों और उनके परिवारों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मंडल रेल प्रबंधक,अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश एवं पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन अहमदाबाद की चेयरमैन श्रीमती शेफाली गुप्ता उपस्थित रहीं।

'रेलवे सेवार्थ ग्रुप' के इस पुनीत कार्य में रेलवे कर्मचारियों और उनके परिजनों ने पूरे उत्साह के साथ सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए कुल 101 यूनिट रक्त एकत्रित किया।

DRM श्री वेद प्रकाश ने सभी रक्तदाताओं को इस जीवनदायी योगदान के लिए बधाई दी और रेलवे सेवार्थ ग्रुप के सेवा भाव की सराहना करते हुए भविष्य में भी ऐसे सामाजिक सरोकार के कार्य करते

रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए रक्तदान को मानवता की सेवा का सर्वोत्तम माध्यम बताया तथा समाज के प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति से नियमित रूप से रक्तदान करने का आह्वान किया।

WRWWO की चेयरमैन श्रीमती शेफाली गुप्ता ने कार्यक्रम के बेहतरीन प्रबंधन की जमकर सराहना की। इस दौरान उन्होंने एक बेहद महत्वपूर्ण और संवेदनशील सुझाव देते हुए कहा कि अहमदाबाद डिवीजन में रेलवे का खुद का एक समर्पित 'ब्लड बैंक' होना चाहिए, ताकि आपातकालीन स्थिति में रेल कर्मचारियों और आमजन की त्वरित मदद की जा सके।

समारोह के दौरान रक्तदाताओं की सराहना करते हुए दो अधिकारियों, सहायक वाणिज्य प्रबंधक-FM और सहायक मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर महेसाणा को उनके उत्कृष्ट सहयोग के लिए मुख्य अतिथियों द्वारा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करने के लिए मंडल के वरिष्ठ अधिकारीगण भी मौजूद रहे, जिनमें वरिष्ठ मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार इंजीनियर,वरिष्ठ मंडल इलैक्ट्रिक इंजीनियर-टीआरडी,वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर-जी,मंडल इंजीनियर-नॉर्थ एवं सहायक वाणिज्य प्रबंधक-FM उपस्थित रहे।

'विकसित पोरबंदर : फर्नीचर पार्क समिट' संपन्न : देश के सबसे अत्याधुनिक फर्नीचर पार्क के लिए पोरबंदर का चयन, 100 हेक्टेयर में आकार लेगा फर्नीचर पार्क

- पोरबंदर के सांसद और केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने समिट की अध्यक्षता की : वन, पर्यावरण और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया भी रहे मौजूद
- गुजरात इंडस्ट्रीज फ्रेंडली राज्य, पोरबंदर के फर्नीचर पार्क से गुजरात का वैश्विक व्यापार बढ़ेगा : केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया
- मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में लॉन्च होने वाली नई औद्योगिक नीति का लाभ पोरबंदर के प्रस्तावित फर्नीचर पार्क के उद्योगकारों को भी मिलेगा : वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया
- भारत का फर्नीचर उद्योग ब्रिटेन के बाजारों तक पहुंचने की उम्मीद है : ब्रिटिश उपउच्चायुक्त श्री स्टीव हिकलिंग
- केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने फर्नीचर पार्क की रूपरेखा निर्धारित करने के लिए देश के अग्रणी उद्योगकारों के साथ संवाद कर उनके सुझाव प्राप्त किए
- समिट में फर्नीचर उद्योग के अग्रणी उद्योगकार शामिल हुए
- उद्योगकार 14 जून को प्रस्तावित फर्नीचर पार्क साइट का दौरा करेंगे
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की नीतियों और प्रोत्साहन के तहत गुजरात में बनेंगे नए इंडस्ट्रियल पार्क, सौराष्ट्र के तटीय इलाकों का होगा विकास

गांधीनगर : केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया की अध्यक्षता में शनिवार को पोरबंदर में आयोजित 'विकसित पोरबंदर फर्नीचर पार्क समिट' सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस समिट में देशभर के फर्नीचर उद्योग से जुड़े उद्योगकारों ने केंद्र और राज्य सरकार की प्रोत्साहक नीतियों की जानकारी हासिल की। उद्योगकारों ने प्रतिक्रिया में कहा कि तटीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण पोरबंदर में वैश्विक व्यापार कनेक्टिविटी की अपार संभावना हैं। साथ ही, यहां उद्योगकारों को मिलने वाली सुविधाएं व्यापार अनुकूल होंगी।

पोरबंदर के सांसद और केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने इस मौके पर उद्योगकारों, निर्यातकों और पोरबंदर के स्थानीय कारोबारियों के साथ-साथ वैश्विक व्यापार से जुड़ी भारत की अग्रणी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ संवाद किया। उन्होंने कहा कि यह फर्नीचर पार्क प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'विकसित पोरबंदर-विकसित गुजरात' से विकसित भारत के संकल्प में अहम भूमिका निभाएगा और पोरबंदर-सौराष्ट्र की वैश्विक कनेक्टिविटी बेहतर होगी।

पोरबंदर के निकट फर्नीचर पार्क के लिए प्रस्तावित साइट तय कर ली गई है। यह प्रोजेक्ट आने वाले समय में गुजरात सरकार और भारत सरकार के समन्वय से साकार होगा। इसके लिए 100 हेक्टेयर जमीन का चयन भी हो चुका है और भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया जारी है। पोरबंदर के कुछड़ी गांव के पास शिप बिल्डिंग क्लस्टर तैयार करने का भी प्रस्ताव रखा गया। उद्योगकार 14 जून को भारवाड़ा कुछड़ी सहित क्षेत्रों का दौरा करेंगे।

केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने कहा कि भारत आज एक तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था और एक विशाल बाजार के रूप में वैश्विक पटल पर स्थापित हो रहा है, जहां लोगों की क्रय शक्ति लगातार बढ़ रही है। देश में स्थिर और मजबूत सरकार के निर्णायक कदमों एवं स्पष्ट रोडमैप के साथ भारत 2047 तक विकसित देश बनने के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। इसके लिए ब्रिटेन, यूरोपियन यूनियन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) किए गए हैं।

श्री मांडविया ने देश के सर्वांगीण विकास के लिए औद्योगिक प्रगति को अनिवार्य करार देते हुए कहा कि हमारी सरकार गरीबों और किसानों के कल्याण के साथ-साथ उद्योगों के लिए भी अनुकूल वातावरण तैयार करने वाली सरकार है, क्योंकि बिना उद्योगों का विकास किए 2047 तक विकसित राष्ट्र का सपना साकार करना असंभव है। उन्होंने पोरबंदर को एक आदर्श स्थान बताते हुए कहा कि यह प्रधानमंत्री के 'बंदरगाह-आधारित औद्योगिकीकरण' के विजन को पूरा करने की क्षमता रखता है।

केंद्रीय मंत्री ने फर्नीचर पार्क के विचार को समझाते हुए कहा कि यहां डिजाइनिंग, स्किलिंग सेंटर और सभी जरूरी सुविधाएं एक छत तले उपलब्ध होंगी। उन्होंने सभी सहभागियों को निवेश के लिए आमंत्रित करते हुए यह भरोसा दिलाया कि सरकार उनके सुझावों पर विचार करके सभी आवश्यक सुविधाएं एवं सहयोग देने को कटिबद्ध है।

उन्होंने कहा कि गुजरात के लंबे समुद्र तट और रणनीतिक भौगोलिक स्थान का लाभ उठाकर राज्य को वैश्विक स्तर पर मैन्युफैक्चरिंग और निर्यात का एक नया पावरहाउस बनाने के लिए कृतसंकल्प है। इसके तहत गुजरात मैरीटाइम बोर्ड, केंद्र और राज्य सरकार के संयुक्त सहयोग से पोबंदर को एक मॉडल पोर्ट-आधारित औद्योगिक हब के रूप में विकसित करने का मेगा विजन तैयार किया गया है। साथ ही, पोरबंदर में एक अत्याधुनिक शिप बिल्डिंग क्लस्टर और फर्नीचर पार्क की स्थापना की कवायद शुरू की गई है। गुजरात के वन, पर्यावरण और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया ने कहा कि फर्नीचर पार्क का विचार केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया की दीर्घदृष्टि का परिणाम है। पोरबंदर 16वीं सदी से समुद्री व्यापार के जरिए अफ्रीका और खाड़ी देशों से जुड़ा है।

श्री मोढवाडिया ने पोरबंदर को निवेशकों के लिए श्रेष्ठ बताते हुए कहा कि वापी-अहमदाबाद के गोल्डन कॉरिडोर की तुलना में यहां जमीन की कीमत काफी कम है। यहां सस्ती जमीन और सस्ता श्रमबल उपलब्ध है। पवन और सौर ऊर्जा का हब होने के कारण यहां उद्योगों को गुणवत्तापूर्ण बिजली भी मिलेगी। साथ ही, रोड, रेल और हवाई कनेक्टिविटी की दृष्टि से भी यह शहर बेहतर है।

श्री मोढवाडिया ने सरकार के सहयोग का आश्वासन देते हुए कहा कि इस प्रोजेक्ट में भारत सरकार और गुजरात सरकार संयुक्त भागीदार हैं। राज्य सरकार जल्द ही देश की सबसे आकर्षक नई इंडस्ट्रियल पॉलिसी और डेटा सेंटर पॉलिसी घोषित करने जा रही है, जबकि शिप बिल्डिंग नीति को मंजूरी दे दी गई है। उन्होंने कहा कि सरकार की नीति सर्वांगीण विकास और रोजगार को ध्यान में रखते हुए इंडस्ट्रीज फ्रेंडली रही है। इस प्रोजेक्ट के लिए कलेक्टर कार्यालय से लेकर गांधीनगर तक, सभी स्तर पर तेज गति से मंजूरी दी जाएगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि दक्षिण कोरिया के सहयोग से पोरबंदर वैश्विक स्तर पर विकास की लंबी छलांग लगाएगा।

ब्रिटिश उपउच्चायुक्त श्री स्टीव हिकलिंग ने पोरबंदर को 'ग्लोबल फर्नीचर हब' के रूप में विकसित करने के प्रोजेक्ट को अद्भुत करार देते हुए इसकी सराहना की। उन्होंने पोरबंदर के परंपरागत और आधुनिक उद्योगों के समन्वय की प्रशंसा करते हुए आशा व्यक्त की कि यहां का फर्नीचर उद्योग ब्रिटेन के बाजारों तक पहुंचेगा। श्री हिकलिंग ने कहा कि गुजरात भारत के आर्थिक विकास का मुख्य इंजन है और देश के कुल निर्यात में इसकी हिस्सेदारी लगभग 30 फीसदी है। गुजरात मैरीटाइम बोर्ड के उपाध्यक्ष और सीईओ डॉ. अजय कुमार ने कुछड़ी में प्रस्तावित शिप बिल्डिंग क्लस्टर प्रोजेक्ट के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप ने चर्चा में बताया कि क्यों पोरबंदर फर्नीचर पार्क के लिए सबसे श्रेष्ठ विकल्प है।

पोरबंदर जिला कलेक्टर श्री एस.डी. धानाणी ने स्वागत भाषण दिया। समिट के अंतर में पोरबंदर और सौराष्ट्र की संस्कृति को उजागर करने वाला सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। समिट में पोरबंदर के महापौर श्री सागर मोदी, पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री बाबूभाई बोखीरिया सहित देश के 50 से अधिक फर्नीचर क्षेत्र से जुड़े उद्योगकार तथा विभिन्न उद्योग एसोसिएशनों के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

मुंबई-दिल्ली रेल कॉरिडोर पर इंजीनियरिंग का कमाल: वडोदरा मंडल ने तीन घंटे में पूरा किया चुनौतीपूर्ण ब्रिज उन्नयन कार्य

वडोदरा। भारतीय रेल लगातार अपनी आधारभूत संरचना को अधिक मजबूत, सुरक्षित और आधुनिक बनाने की दिशा में बड़े कदम उठा रही है। इसी क्रम में पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल ने एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि हासिल करते हुए मुंबई-दिल्ली मेन लाइन पर स्थित एक महत्वपूर्ण रेलवे पुल के उन्नयन कार्य को रिकॉर्ड समय में सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। देश के सबसे व्यस्त और रणनीतिक रेल मार्गों में शामिल मुंबई-दिल्ली मुख्य रेलखंड पर सीमित समय में इतनी बड़ी इंजीनियरिंग परियोजना को पूरा करना न केवल तकनीकी दक्षता का उदाहरण है, बल्कि भारतीय रेल के आधुनिकीकरण अभियान की सफलता को भी दर्शाता है।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के इंजीनियरिंग विभाग ने मंडल रेल प्रबंधक राजू भडके के नेतृत्व में सूरत-वडोदरा रेलखंड पर स्थित ब्रिज संख्या 566 पर मौजूदा स्टील गर्डर को हटाकर उसके स्थान पर प्री-स्ट्रेस्ड सीमेंट कंक्रीट (पीएससी) स्लैब स्थापित करने का जटिल कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया। इस परियोजना के अंतर्गत 12.20 मीटर के तीन स्पैन वाले पुल ढांचे का प्रतिस्थापन मात्र तीन घंटे के एकल ट्रैफिक ब्लॉक के दौरान पूरा किया गया। रेलवे इंजीनियरिंग की दृष्टि से यह कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण माना जाता है, क्योंकि मुंबई-दिल्ली रेल मार्ग देश के सबसे व्यस्त रेल कॉरिडोरों में से एक है, जहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में यात्री और मालगाड़ियां संचालित होती हैं। रेलवे अधिकारियों के अनुसार इतनी सीमित अवधि में इस प्रकार के संरचनात्मक बदलाव को पूरा करने के लिए महीनों पहले से विस्तृत योजना तैयार की गई थी। परियोजना के प्रत्येक चरण का सूक्ष्म अध्ययन किया गया और कार्य आरंभ होने से पहले सभी तकनीकी पहलुओं का परीक्षण किया गया। वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) सुमित ठाकुर ने बताया कि निर्धारित ब्लॉक अवधि के भीतर इस जटिल कार्य को पूरा करना वडोदरा मंडल की तकनीकी क्षमता, योजनाबद्ध कार्यप्रणाली और विभिन्न विभागों के बीच उत्कृष्ट समन्वय का परिणाम है।

उन्होंने कहा कि रेलवे संरचनाओं के उन्नयन कार्यों में समय प्रबंधन सबसे बड़ी चुनौती होती है। विशेष रूप से ऐसे रेलखंडों पर जहां यातायात का दबाव अत्यधिक हो, वहां कार्य की अवधि को न्यूनतम रखना अनिवार्य हो जाता है। इस परियोजना में इंजीनियरों और तकनीकी विशेषज्ञों ने प्रत्येक गतिविधि के लिए पहले से समय निर्धारित किया था, जिससे कार्य बिना किसी विलंब के पूरा किया जा सके। यही कारण रहा कि तीन घंटे की निर्धारित समयसीमा के भीतर पूरा कार्य सुरक्षित और सफलतापूर्वक संपन्न कर लिया गया।

इस उपलब्धि के पीछे आधुनिक मशीनों और उन्नत तकनीकी संसाधनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। परियोजना के दौरान 500 टन क्षमता वाली विशाल क्रेन का उपयोग किया गया, जिसकी सहायता से भारी संरचनात्मक हिस्सों को हटाने और नए पीएससी स्लैब को स्थापित करने का कार्य किया गया। इसके अतिरिक्त पोकलेन मशीन, पेवमेंट ब्रेकर, हैंड ब्रेकर तथा ट्रैक टैम्पिंग मशीन जैसे अत्याधुनिक उपकरणों का उपयोग कर कार्य को गति और सटीकता प्रदान की गई। इन मशीनों की मदद से पुल संरचना के विभिन्न हिस्सों को सुरक्षित रूप से हटाने और पुनर्स्थापित करने का काम निर्धारित समय में पूरा किया गया।

रेलवे विशेषज्ञों का मानना है कि स्टील गर्डर की तुलना में प्री-स्ट्रेस्ड सीमेंट कंक्रीट स्लैब अधिक टिकाऊ और दीर्घकालिक समाधान प्रदान करते हैं। पीएससी तकनीक का उपयोग करने से पुल की भार वहन क्षमता बढ़ती है, रखरखाव की आवश्यकता कम होती है और संरचना की आयु भी लंबी होती है। इसके अलावा यह तकनीक रेल परिचालन की सुरक्षा और स्थिरता को भी बेहतर बनाती है। यही कारण है कि भारतीय रेल देशभर में पुराने पुलों और संरचनाओं के आधुनिकीकरण के लिए पीएससी तकनीक को प्राथमिकता दे रही है। इस परियोजना की सफलता में इंजीनियरिंग विभाग के साथ-साथ टीआरडी (ट्रैक्शन डिस्ट्रीब्यूशन) विभाग की टीम का भी विशेष योगदान रहा। कार्य के दौरान विद्युत आपूर्ति व्यवस्था, सुरक्षा मानकों और तकनीकी समन्वय को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक था। विभिन्न विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने एकजुट होकर कार्य किया, जिसके परिणामस्वरूप पूरी प्रक्रिया बिना किसी तकनीकी बाधा के सफलतापूर्वक पूरी हो सकी। रेलवे प्रशासन ने इस उपलब्धि को टीम वर्क, समर्पण और पेशेवर दक्षता का उत्कृष्ट उदाहरण बताया है।

पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी अनुभव सक्सेना द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस उन्नयन कार्य से रेलवे अवसंरचना की मजबूती और विश्वसनीयता में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी। पुल की नई संरचना भविष्य में बढ़ते रेल यातायात और अधिक भार वहन की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा करने में सक्षम होगी। साथ ही इससे यात्रियों और माल परिवहन दोनों के लिए सुरक्षित एवं सुचारु रेल संचालन सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

भारतीय रेल वर्तमान समय में देशव्यापी आधारभूत संरचना उन्नयन कार्यक्रम पर तेजी से कार्य कर रही है। पुराने पुलों, ट्रैक, सिग्नलिंग प्रणालियों और स्टेशन परिसरों का आधुनिकीकरण कर रेलवे को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया जा रहा है। वडोदरा मंडल द्वारा हासिल की गई यह सफलता इसी व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा मानी जा रही है। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि ऐसे कार्य केवल संरचनात्मक सुधार नहीं हैं, बल्कि ये रेल नेटवर्क की दीर्घकालिक सुरक्षा और दक्षता सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण निवेश हैं।

मुंबई-दिल्ली मुख्य रेलमार्ग देश की आर्थिक और परिवहन व्यवस्था की जीवनरेखा माना जाता है। इस मार्ग पर प्रतिदिन हजारों यात्री और बड़ी मात्रा में माल परिवहन होता है। ऐसे में इस रेलखंड पर स्थित प्रत्येक पुल और संरचना की मजबूती और सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। ब्रिज संख्या 566 का सफल उन्नयन भविष्य में इस मार्ग की परिचालन क्षमता और विश्वसनीयता को और मजबूत करेगा। रेलवे विशेषज्ञों के अनुसार सीमित ट्रैफिक ब्लॉक में इस स्तर का कार्य पूरा करना आसान नहीं होता।

विश्व रक्तदान दिवस पर मानवता का उत्सव: महेसाणा रेलवे स्टेशन पर 101 यूनिट रक्तदान, सेवा और संवेदना का बना प्रेरक उदाहरण

अहमदाबाद। विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर महेसाणा रेलवे स्टेशन सामाजिक सरोकार और मानवीय सेवा का एक प्रेरणादायक केंद्र बन गया, जहां रेलवे कर्मचारियों और उनके परिवारों ने स्वैच्छिक रक्तदान कर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का परिचय दिया। रेलवे कर्मचारियों के 'रेलवे सेवार्थ ग्रुप' की पहल पर आयोजित रक्तदान शिविर में बड़ी संख्या में रेलकर्मियों, उनके परिजनों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और जरूरतमंद लोगों के जीवन की रक्षा के लिए रक्तदान का संकल्प लिया। इस आयोजन ने न केवल मानवता की सेवा का संदेश दिया, बल्कि यह भी सिद्ध किया कि रेलवे परिवार केवल परिवहन सेवाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

कार्यक्रम में अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक वेद प्रकाश तथा पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा शेफाली गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। दोनों अतिथियों ने रक्तदाताओं से मुलाकात कर उनका उत्साहवर्धन किया और इस पुनीत कार्य में भाग लेने के लिए उनकी सराहना की। कार्यक्रम के दौरान रक्तदान करने वाले कर्मचारियों और उनके परिजनों में विशेष उत्साह देखने को मिला। अनेक लोगों ने पहली बार रक्तदान किया, जबकि कई नियमित रक्तदाताओं ने भी इस अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाई।

रक्तदान शिविर के दौरान कुल 101 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया, जिसे स्वास्थ्य सेवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान माना जा रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार एक यूनिट रक्त कई मरीजों के उपचार में उपयोगी साबित हो सकता है और गंभीर परिस्थितियों में किसी व्यक्ति का जीवन बचाने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है। ऐसे में 101 यूनिट रक्त का संग्रह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि अनेक जरूरतमंद लोगों के लिए जीवन की आशा का प्रतीक है।

मंडल रेल प्रबंधक वेद प्रकाश ने इस अवसर पर रक्तदान को मानवता की सबसे बड़ी सेवा बताते हुए कहा कि स्वस्थ व्यक्ति द्वारा किया गया रक्तदान किसी अजनबी के जीवन में नई उम्मीद जगा सकता है। उन्होंने कहा कि समाज में रक्त की आवश्यकता निरंतर बनी रहती है और दुर्घटनाओं, सर्जरी, गंभीर बीमारियों तथा आपातकालीन चिकित्सा परिस्थितियों में इसकी जरूरत और बढ़ जाती है। इसलिए प्रत्येक स्वस्थ नागरिक को नियमित रूप से रक्तदान करने के लिए आगे आना चाहिए। उन्होंने रेलवे सेवार्थ ग्रुप की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन समाज में जागरूकता बढ़ाने और लोगों को सेवा कार्यों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कार्यक्रम में उपस्थित पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा शेफाली गुप्ता ने भी रक्तदान शिविर के सफल आयोजन की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि रक्तदान केवल एक सामाजिक दायित्व नहीं बल्कि मानव जीवन के प्रति हमारी संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का प्रतीक है। उन्होंने इस अवसर पर अहमदाबाद मंडल में रेलवे का स्वयं का समर्पित रक्त बैंक स्थापित करने का सुझाव भी रखा। उनका मानना था कि यदि रेलवे का अपना रक्त बैंक स्थापित हो जाए तो आपातकालीन परिस्थितियों में रेल कर्मचारियों, उनके परिवारों और आम नागरिकों को समय पर रक्त उपलब्ध कराने में बड़ी सहायता मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि यह पहल भविष्य में रेलवे परिवार के लिए एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सुरक्षा तंत्र के रूप में विकसित हो सकती है।

रक्तदान शिविर के आयोजन में रेलवे प्रशासन, रेलवे सेवार्थ ग्रुप और विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सक्रिय सहयोग देखने को मिला। आयोजन स्थल पर रक्तदाताओं के लिए आवश्यक स्वास्थ्य सुविधाएं, चिकित्सकीय जांच और परामर्श की समुचित व्यवस्था की गई थी। विशेषज्ञ चिकित्सकों और स्वास्थ्यकर्मियों की निगरानी में पूरी प्रक्रिया को सुरक्षित और व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराया गया। रक्तदान से पहले प्रत्येक इच्छुक व्यक्ति की स्वास्थ्य जांच की गई, ताकि केवल योग्य और स्वस्थ व्यक्ति ही रक्तदान कर सकें।

कार्यक्रम के दौरान कई रेलकर्मियों ने रक्तदान के महत्व पर अपने अनुभव भी साझा किए। उन्होंने बताया कि रक्तदान एक सरल और सुरक्षित प्रक्रिया है, जिससे किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता, जबकि इसका लाभ किसी जरूरतमंद के लिए अमूल्य हो सकता है। कई कर्मचारियों ने भविष्य में भी नियमित रूप से रक्तदान करने का संकल्प व्यक्त किया।

इस अवसर पर उन अधिकारियों को भी सम्मानित किया गया जिन्होंने आयोजन को सफल बनाने में विशेष योगदान दिया। सहायक वाणिज्य प्रबंधक-एफएम तथा सहायक मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार अभियंता, महेसाणा को उनके उत्कृष्ट सहयोग के लिए स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह के दौरान उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों ने उनके योगदान की सराहना की और कहा कि सामूहिक प्रयासों से ही इस प्रकार के सामाजिक अभियान सफल हो पाते हैं। रक्तदान शिविर में अहमदाबाद मंडल के अनेक वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे। उन्होंने रक्तदाताओं का उत्साह बढ़ाया और आयोजन की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने कहा कि रेलवे परिवार हमेशा सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाता रहा है और भविष्य में भी इस प्रकार के जनहितकारी कार्यक्रमों का आयोजन जारी रहेगा। विश्व रक्तदान दिवस का उद्देश्य लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान के प्रति जागरूक करना और सुरक्षित रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए समाज को प्रेरित करना है। हर वर्ष लाखों मरीजों को समय पर रक्त न मिलने के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में स्वैच्छिक रक्तदान अभियान स्वास्थ्य व्यवस्था की मजबूती के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। महेसाणा रेलवे स्टेशन पर आयोजित यह शिविर इसी उद्देश्य को साकार करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास साबित हुआ।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प से किसानों को मिला आर्थिक सुरक्षा का कवच

- समर्थन मूल्य पर रिकॉर्ड खरीद से गुजरात के लाखों किसान बने आत्मनिर्भर
- गत 10 वर्षों में समर्थन मूल्य पर 65,570 करोड़ रुपए मूल्य की 1.05 करोड़ मीट्रिक टन उपज की खरीद हुई

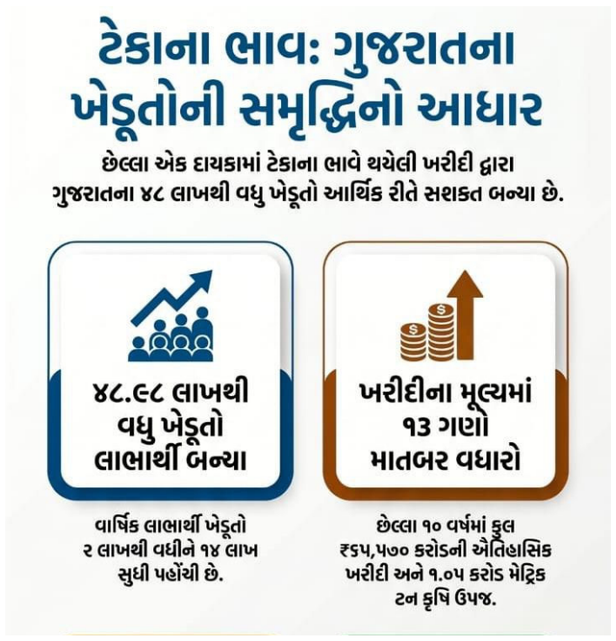

गांधीनगर, : एक दौर था जब किसानों को फसल तैयार होने के बाद बाजार में मिलने वाले कम मूल्य, बिचौलियों के हस्तक्षेप और भुगतान में विलंब जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। लेकिन, पिछले एक दशक में केंद्र सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के अंतर्गत खरीद व्यवस्था में किए गए सुधारों से गुजरात के लाखों किसानों के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'फसल की लागत का डेढ़ गुना दाम' देने की नीति लागू होने से किसानों को उनकी उपज का लाभकारी दाम मिलने लगा है। नतीजतन, किसानों की आय में बढ़ोतरी हुई है और खेती अधिक लाभकारी बन गई है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी के मार्गदर्शन में गुजरात ने समर्थन मूल्य पर खरीद की योजना को और भी व्यापक बनाया है। गत एक दशक में हुई खरीद के आंकड़े इसका उत्तम उदाहरण हैं।

मुख्य आंकड़ों पर एक नजर :

- गत 10 वर्षों में समर्थन मूल्य पर खरीदी : 65,570 करोड़ रुपए
- कुल खरीद की गई उपज : 1.05 करोड़ मीट्रिक टन
- लाभार्थी किसान : 48.98 लाख से अधिक
- मूंगफली खरीद : 31,941 करोड़ रुपए
- कपास खरीद : 17,759 करोड़ रुपए
- वार्षिक लाभार्थी किसान : 2 लाख से बढ़कर 14 लाख
- खरीद मूल्य में बढ़ोतरी : 13 गुना
- एमएसपी में बढ़ोतरी : 54 से 127 फीसदी

मूंगफली और कपास के किसानों को सर्वाधिक फायदा

गुजरात की कृषि अर्थव्यवस्था में मूंगफली और कपास का विशेष महत्व है। गत दस वर्षों में राज्य में 52.48 लाख मीट्रिक टन मूंगफली की खरीदी के जरिए किसानों को 31,941 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया है। वहीं, कपास की वैश्विक कीमत में गिरावट के दौरान भी सरकार ने 25.23 लाख मीट्रिक टन कपास की खरीद करके किसानों को 17,759 करोड़ रुपए का रक्षा कवच दिया है।

चना और अरहर के किसानों को भी बड़ा लाभ

रबी फसलों का मुख्य आधार माने जाने वाले चने की 16.81 लाख मीट्रिक टन खरीदी की गई और किसानों को 9549 करोड़ रुपए की अदायगी की गई। जबकि मध्य और दक्षिण गुजरात के किसानों की महत्वपूर्ण फसल अरहर की 4.97 लाख मीट्रिक टन खरीद करके 3222 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया।

इसके अलावा, सरसो, सोयाबीन, उड़द और मूंग जैसी फसलों की खरीद से भी हजारों छोटे और सीमांत किसान सीधे तौर पर लाभान्वित हुए हैं।

10 वर्ष में 7 गुना बढ़ोतरी

वर्ष 2016-17 में केवल 2.01 लाख किसानों से 1775 करोड़ रुपए की फसल खरीदी गई थी। आज स्थिति बदल चुकी है। वर्ष 2025-26 के दौरान 14 लाख से अधिक किसानों से 23,800 करोड़ रुपए मूल्य की 32.54 लाख मीट्रिक टन उपज की खरीद की गई है। किसानों की संख्या में 7 गुना और खरीद मूल्य में 13 गुना की बढ़ोतरी इस योजना की सफलता की गवाही देती है।

बुवाई से पहले ही समर्थन मूल्य की घोषणा

केंद्र सरकार अब बुवाई से पहले ही न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की घोषणा की जाती है, ताकि किसानों को फसल बुवाई की कार्ययोजना बनाने में मदद मिल सके। कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (सीएसीपी) बीज, खाद, बिजली, डीजल और मजदूरी जैसे खर्चों का अध्ययन करके समर्थन मूल्य निर्धारित करता है।

सरकार के अनुसार एमएसपी का निर्धारण इस प्रकार किया जाता है, जिससे किसानों को उत्पादन लागत पर कम से कम 50 फीसदी मुनाफा मिल सके।

डीबीटी से बढ़ी पारदर्शिता

खरीद प्रक्रिया में टेक्नोलॉजी के उपयोग से किसानों को बड़ा लाभ हुआ है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के जरिए भुगतान सीधे किसानों के बैंक खातों में जमा होने से बिचौलियों की भूमिका कम हुई है और पारदर्शिता बढ़ गई है।

एमएसपी में उल्लेखनीय बढ़ोतरी

गत एक दशक में विभिन्न फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। धान (सामान्य) में 61 फीसदी, गेहूं में 59, बाजरा में 108, ज्वार (हाइब्रिड) में 127 और मूंगफली में 102 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। कपास की एमएसपी में भी करीब 99 फीसदी तक की बढ़ोतरी की गई है।

किसानों के अनुसार, समर्थन मूल्य पर खरीद और समय पर भुगतान होने के कारण कृषि क्षेत्र में विश्वास बढ़ा है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई मजबूती मिली है।